न धर्म न ईमान

रेवतीसरन शर्मा

मूल्य तीन रुपये पचास पैसे

आवरण सुकुमार चटर्जी
प्रथम संस्करण, १९७०
□□
प्रकाशक
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२/३५ अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-६

मुद्रक राष्ट्रभाषा प्रिंटर्स, दिल्ली-६

नाटक के बारे में

साहित्य, कला और दर्शन—तीनो मे एक क्राति आयी है। सोचने, महसूस करने और व्यक्त करने के पुराने अन्दाज, पुराने ढग, पुराने साचे ठुकराकर एक ओर फेक दिए गये हैं। जो कभी निश्चित था, नियमबद्ध था, आज अनिश्चित और मुक्त है। पाबन्दियाँ—सोच की, विधा की, व्याकरण की नकली और अन्यायपूर्ण करार दे दी गई है। हर बात को नए ढग से सोचने और पेश करने की चेष्टा पहला सर्जनात्मक धर्म बन गया है।

यही कारण है कि चित्रकला, मूर्तिकला, सगीत, नाटक—सब मे एक नया रूप (अरूप भी कह सकते हैं) उभर रहा है। सृजन करने वाले से मांग है कि वह पुराने चश्मे उतारे और अपनी नगी आंख से नगी वास्तविकता को देखकर नगे शब्दो और शैली मे व्यक्त करे। नाटक के क्षेत्र मे, इसका अर्थ है, मच की कैद से आजाद होकर, समय और स्थान की सीमा लांघकर, दर्शको को हिप्नोटाइज किए बिना, दर्शको मे घुसकर, दर्शको मे से निकलकर, दर्शको को पात्र बनाकर और पात्रो को दर्शक बनाकर, जीवन की उस वास्तविकता को पेश किया जाए, जिसे आज तक नाटककार परम्परा मे कैद होने या उससे प्रभावित होने के कारण, प्रस्तुत नहीं कर सका।

यह मांग निश्चय ही प्रगति की मांग है और नाटककार जितना मच से अधिक लचक और आजादी की मांग करेंगे, उतना ही उनके नाटको मे जीवन से सामीप्य आ जाएगा। शिल्प के उतने ही नए प्रयोग वे कर पाएँगे और वास्तविकता की चौंका देने वाली अभिव्यक्ति, नाटक को कुतूहल के नए तत्वो से सँवारकर दर्शको को अपनी ओर खींच सकेगी।

बगला, मराठी और कन्नड मे इस कारण कई उल्लेख्य नाटक लिखे

गए हैं। बादल सरकार के नाटक विशेषत इस रग के प्रतिनिधि नाटक कहे जा सकते है।

लेकिन यह प्रवृत्ति बहुत जल्द एक बद गली मे भी ले जा खडा करती है। कम प्रतिभाशाली नाटककार सचमुच अच्छे नाटक लिखने के बजाए ऊलजलूल शब्दावली को लेकर, चीजो को उलझाकर, स्पष्ट को अस्पष्ट और अस्पष्ट को स्पष्ट घोषित कर, ऐसे नाटक लिखते हैं, जिनके बारे मे वही कहा जा सकता है जो गालिब ने कहा

बक रहा हूँ जनू मे क्या-क्या कुछ
कुछ न समझे खुदा करे कोई।

इसलिए अपनी कृतियो मे मैंने चीजो को उलझाने की नही, सुलझाने की कोशिश की है। इन्सान हर स्थिति से अच्छा-बुरा एक रास्ता निकाल ही लेता है। उसका इतिहास अभी तक बन्द गली मे जाकर खत्म नही हुआ। दोराहो, चौराहो, रुकावटो ने उसकी राह रोकी है। वह उलझकर खडा हुआ भी है, लेकिन रुका नही है—उसने रास्ता निकाला है और अनिश्चित को निश्चित का और अस्पष्ट को स्पष्ट का रूप देकर वास्तविकता को प्रकाशित किया है। और वह रास्ता, वह प्रकाश उसे मौत की तरफ नही, जीवन की, जीवित रहने की तरफ ले गया है। एटम बम और हाइड्रोजन बम के बावजूद हमारा आज भी जिन्दा होना इसका अकाट्य सबूत है।

इसलिए मैंने आज के साहित्यिक फैशन को स्वीकार नही किया है और उलझी हुई शब्दावली के गोरखधन्धो को सवाद और विश्लेषण का स्थान देकर 'आधुनिक' बनने का वह प्रयास नही किया जो अन्य नाटककारो ने हाल मे किया है। मेरा यह नाटक 'न धर्म, न ईमान' इसी प्रयास का नतीजा है। मुझे जो कहना है मुझे मालूम है और वह मैंने ऐसी भाषा मे कहा है जो अपने मे छल का कोई पहलू नही रखती। जो उलझाती नही, सुलझाती है। दिमाग की बत्तियाँ गुल करने के बजाए सुझावो के दीप जलाता है।

नाटक का कथानक भी 'आधुनिक' नही है। इसमे एक युवक एक युवती के लिए 'देवदास' बन जाता है और लडकी का विवाह हो जाने पर भी उसके प्यार मे जीता है और तब वह अपने पति को छोडकर उसके

पास आती है तो उसे स्वीकार कर लेता है। विघटन और अवमूल्यन के इस युग में लगभग सब भावनाओं का अवमूल्यन हुआ है और प्रेम इसमें सबसे ऊपर है। 'आदर्श प्रेम' कोरी कल्पना है, कवियों की मनगढ़न्त है और इसका कोई अस्तित्व नहीं। लगभग ऐसा ही कहा गया है। लगभग होता भी ऐसा ही है। कोई किसी के लिए नहीं मरता। सब अपने लिए जीते हैं। प्रेम लैंगिक सुख की चाह का दूसरा नाम है और जो उसे गरिमा प्रदान करने की कोशिश करते हैं, वे शायरी के सिवा कुछ नहीं करते। मुझे भी इससे इनकार नहीं। आम तौर पर ऐसा ही है। लेकिन आज भी आत्महत्या करने वालों में प्रधानता उन्हीं की है, जो प्यार करते हैं, जिन्हें अपनी प्रेमिका के बिना जीवन मौत के कूड़ेदान में फेंकने लायक बेकार लगता है। मेरा यह नाटक उन्हीं गिने-चुने पर हमारे बीच निरन्तर ही मौजूद अति-जीवित आदमियों के 'सत्य' को प्रस्तुत करता है।

नाटक का अन्त पाठकों और दर्शकों के मस्तिष्क में कई सवाल पैदा कर सकता है। विवाहित दया का दिनेश के पास चले आना अनैतिक है। उसे अपने पति के पास रहना चाहिए। जब यह नाटक दिल्ली में श्री कारन्थ के निर्देशन में खेला गया तब भी यही सवाल उठे थे। कुछ अभिनेताओं का विचार था कि दया को अन्त में अपना फैसला बदल देना चाहिए और अपने पति के घर लौट जाना चाहिए। उनके अनुरोध पर पहले दिन नाटक का अन्त ऐसे ही किया गया। परन्तु दूसरे दिन अन्त ऐसा रखा गया, जैसा इस नाटक में है और सबको हैरानी हुई कि दर्शकों ने इस अन्त को मुक्त कंठ से सराहा। उन्होंने सिसक-सिसककर मरने की बजाए साहस से, स्वतन्त्र होकर जीने को ज्यादा सराहा। सबने दर्शकों के इस फैसले के सामने सिर झुकाया और नाटक इसी रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

९ जनवरी, १९७० — रेवतीसरन शर्मा

यह नाटक 'टूटे सपने' नाम से कला साधना मन्दिर, दिल्ली द्वारा रगमच पर सफलतापूर्वक प्रदर्शित हो चुका है। निम्न कलाकारो ने भूमिका अदा की

□ □

दिनेश : विमल आहूजा
दया : श्रीमती साधना गुप्ता
दादी श्रीमती उर्मिल राजपाल
चाची कुमारी वीणा सेठी
रामदयाल वालकृष्ण सूद
डाक्टर . श्री के० सी० जोशी
पिता शान्तिस्वरूप कालरा
पडित . श्री साहनी

□ □

निर्देशक : वी० वी० कारन्थ

पात्र

□

दिनेश

दया

चाची

पिता

दादी

रामदयाल

पंडित

डाक्टर

पहला अंक

[एक पुरानी हवेली का कमरा। बायी तरफ एक मसहरीदार पलग पिछली दीवार के साथ बिछा है। इसके सराहने की तरफ किताबो का रैक है। दायी तरफ उपरले कोने मे अन्दर हवेली मे जाने का रास्ता है। इसी तरफ, नीचे को जूते रखने का रैक है। बाहर से आने का दरवाज़ा बायी तरफ है। फर्नीचर के नाम पर कमरे मे एक कुर्सी है, दो गोल मूढे है, जिन पर गहरे उन्नाबी रग का गिलाफ चढा है।

रोशनी होती है तो दया, जो एक पतली-दुबली, साधारण कपडे पहने, तीखे नक्श वाली लडकी है, बिस्तर की चादर ठीक करती नजर आती है। फिर वह किताबो की अलमारी ठीक करती है। फिर पूरे कमरे पर नजर डालती है। उसे रैक मे जूते बे-तरतीब रखे नजर आते हैं। वह रैक की तरफ जाती है और जूते ठीक करती है। फिर एक जूते के जोडे को लेकर बडे प्यार से अपने पल्लू से साफ करने लगती है। तभी बायी तरफ के दरवाज़े से एक नवयुवक प्रवेश करता है। उसके हाथ मे किताबें और प्लास्टिक की जिल्द वाली कॉपी है। वह दया को देखते ही किताबे और कॉपी बिस्तर पर फेककर दया की तरफ बढता है।]

दिनेश दया! यह क्या कर रही हो?

दया (समझकर भी न समझते हुए, चचलतापूर्वक मुसकराते हुए) क्यो?

दिनेश तुम जूते साफ करोगी?

दया (साफ करते हुए) इसमे हर्ज है?

दिनेश . है! (जूते उसके हाथ से लेकर नीचे रखता है)

तुम जूते साफ करने के लिए नही हो ।

दया · (उठते हुए) क्यो ? तुम नही करते ?

दिनेश मेरी बात और है। मैं अपने करता हूँ।

दया ये मेरे नही हैं ?

दिनेश (चौककर दया की तरफ देखता है) नही !

दया (दया का चेहरा उतर जाता है) ये किसी दूसरे के हे ?

दिनेश (एक क्षण के लिए निरुत्तर होकर) तुम बात को समझती क्यो नही हो, दया ! मैं तुमसे जूते साफ कराऊंगा ? (दूसरी तरफ जाते हुए) घर मे कुछ कम लोग है ?

दया तुम तो यूं ही मेरी इतनी फिक्र करते हो। काम करने से कुछ थोडे ही होता है।

दिनेश (व्यग्य से) हाँ ! काम करने मे तो उल्टी तन्दुरुस्ती बनती है, हालत बेहतर होती है, चेहरे पर ताजगी आती हे। आइना देखती हो कभी ?

दया (पास आकर उसकी आँखो मे देखते हुए) रोज देखती हूँ !

दिनेश (हटते हुए) बस-बस, बात खिलाने की कोशिश न करो। (फिर उसकी तरफ पलटते हुए) मैं पूछता हूँ तुम हमारे यहाँ इतना काम क्यो करती हो ? तुम किसी की दरम खरीद हो ?

दया (मुसकराकर) दरम खरीद तो नही, पर तुम ही तो कहते हो, कुछ लोग बे-मोल बिक

जाते हैं।

दिनेश यह मैने अपने लिए कहा था।

दया मेरे लिए नही कहा जा सकता ?

दिनेश नही।

दया क्यो ?

दिनेश बताना होगा कि इस मोती का क्या मोल है ?

दया (सहसा उदास हो, नीचे की तरफ जाते हुए) ककरी को मोती मत कहो।

दिनेश तुम ककरी हो ? तो तुम जा सकती हो। (उसकी तरफ से मुह फेर लेता है)

दया (उसकी ओर जाते हुए) नाराज हो गए ?

दिनेश (खामोश रहता है)

दया (बिल्कुल पास जाकर) इतनी सी बात पर मन से उतार दोगे ?

दिनेश (तडपकर) तो तुम ऐसी बात क्यो कहती हो ? क्यो

दया (उसके मुह पर हाथ रख कर) अच्छा, अब अपने को ककरी कभी नही कहूँगी।

दिनेश (समझाते हुए) आखिर तुम अपने को इतनी छोटी क्यो समझती हो ? (बाजुओ से पकडते हुए) तुममे क्या कमी है ? वक्त ने तुम लोगो को गरीब बना दिया, पर अब भी तुम हमारा दिया तो नही खाते। हवेली मे रहते हो तो किराया देते हो।

दया (उदास हो, बैठते हुए) पर दादी माँ के और ताऊजी के हम पर कितने एहसान है ।

दिनेश (झुझलाकर) क्या एहसान है ? घर की बची-खुची सब्जी दे देना ? फूजी-मिनसी चीजे दे देना ? पुराने उतरे हुए कपडे दे देना ? या जरूरत पडने पर रुपये दे देना, जो हमेशा वापस ले लिए जाते हैं ?

दया : लेकिन हमारी इसी से कितनी मदद हो जाती है।

दिनेश और तुमको और तुम्हारे पिताजी को नौकरो की तरह जो इस्तेमाल किया जाता है ? इस घर का नून-तेल-राशन कौन लाता है ? इस घर के मिर्च-मसाले कौन पीसता है ?

दया : (उसकी कटुता दूर करने के लिए उठकर) तुम फिर वही बात ले बैठे। अपने लोगो के काम करने मे बुराई थोडे ही होती है। और अगर दादीजी मुझसे इतना काम न करातीं, तो मुझे कुछ आता ? लडकियो को काम आना ही चाहिए।

दिनेश (चिढकर) तो जाओ ! मुहल्ले-भर के लोगो के घरो की बेगार भुगताओ ! और काम आ जाएगा ! और कात्रिन बन जाओगी ! जाओ !

दया (आंखो मे मुसकराते और बैठते हुए) जाती हू। थोडा सस्ता तो लू !

दिनेश क्या करोगी ! इतनी तन्दुरुस्त, इतनी पहलवान

जो हो !

दया (बनकर) पर फिर भी कभी-कभी सस्ताने को जी चाहता है।

[दिनेश उसकी तरफ देखता है। दया चचलता से मुसकराती है। उसे मुसकराते देखकर दूसरी तरफ मुह करके बैठ जाता है। दया बडे प्यार से उसकी तरफ देखती रहती है।]

दया : नाराज हो ? मना लूं ? (बनावटी सोच की मुद्रा मे) कैसे ? (फिर पलटकर उसकी ओर चचलतापूर्वक देखते हुए और आगे बढते हुए) माफी मांगू ? हाथ जोड ? (झुककर) पैर छुऊँ ? (दिनेश गुस्से से झटककर उसकी तरफ देखता है। दया बनावटी डर से पीछे हटती है। चचलता और ज्यादा हो जाती है।) नही-नही ! पैर कभी नहीं छुऊँगी—किसी के नहीं ! तुम्हारे भी नही ! क्यो ? अब खुश हो न ? (कन्धा हिलाकर) बोलो ! (आवाज़ नीची करके) देखो मुझे जाना है !

दिनेश (बिना देखे) तो जाओ !

दया तुम नाराज हो और मैं चली गई हूँ, ऐसा हुआ है ?

दिनेश (सहसा तडपकर) दया ! (उसके हाथ हाथो मे ले लेता है।) मेरे इतना समझाने पर भी तुम इतनी हारी, इतनी हीनता की बात क्यो करती हो ?

दया (हाथ छुडाकर नीचे की तरफ जाते हुए) तुम यकीन नही करोगे, दिनेश, मैं तुम्हारे लिए कुछ करती हूं, तुमसे कुछ कहती हूं, तुम्हारे पैरो मे अपनी पलके बिछाने की बात सोचती हू तो मुझे लगता है (जरा तेजी से) मैं धन्य हो गई हूं। (और तेजी से) मेरे भाग खुल गये हे।

दिनेश : (जोर से) गलत। यह तुम्हारे अन्दर अपने को छोटा समझने का भाव है, जो घर कर गया है।

दया (बडी कोमलता से हौले-हौले गर्दन हिलाते हुए) मेरे अन्दर कोई ऐसा भाव घर नही कर सकता। (उसके बाजू से चेहरा लगाते हुए) जिसे प्यार मिल जाता है, उसे दुनिया का सब कुछ मिल जाता है।

दिनेश (उसे सामने करके) और तुम्हे प्यार करके मै भी यही तकलीफ दूंगा जो दुनिया दे रही है? दया, मैं तुम्हे अपने ख्वाबो के मखमल और प्यार के रेशम की आगोश मे संजोकर रखूंगा। तुम्हारे अंग-अंग को मेरे चुम्बनो की गुलाबी पखुडियो के नम होठ सहलाएगे। मेरी उंगलियाँ तुम्हारे बालो को ऐसे सहलाएंगी, जैसे पत्तियो की पलको को सुबह की ओस।

दया (भावातुर होकर) दिनेश! दिनेश, मुझे ऐसे ख्वाब न दिखाओ जो मेरे नसीबो के ऊपर से बादलो की तरह भी न गुजरेंगे। (उदास होकर) मुझे वही

रहने दो, जहाँ कि मैं हूँ।

दिनेश (दृढ निश्चय से, बाजुओ से पकड़कर) तुम जहाँ की हो वही रहोगी, दया। तुम्हे यहाँ से कोई न हटा सकेगा।

चाची : (तभी अन्दर से आवाज़ आती है) दया!

[दया चौंककर और सहमकर दिनेश के हाथो से निकलना चाहती है, लेकिन दिनेश बड़े इत्मीनान से अपने हाथ उनकी बाहों से हटाता है। तब तक चाची अन्दर आ जाती है। दया मंच पर नीचे की तरफ चली जाती है।]

चाची . (दिनेश को देखकर मुसकराते हुए) तो साहब भी यहाँ हैं?

दिनेश . बस अभी आया था, चाची जी!

चाची लेकिन मैंने कब कहा कि आप देर से आए हुए है! क्यो, दया! क्या मैंने ऐसा कहा? (दया मुँह छिपाकर अन्दर भाग जाती है।)

दिनेश मेरी अच्छी चाची मुझे हमेशा अपने साए मे रखेगी न?

चाची (सहसा गभीर और उदास होकर) तभी तक दिनेश जब तक दादीजी को मालूम नही हो जाता। जिस दिन उनको मालूम हो गया

दिनेश (बात काटकर) उस दिन के लिए मैं तैयार हूँ।

चाची (चौंककर) क्या?

दिनेश अब मैं दया के बिना नही रह सकता, चाची जी!

मुझे अब दया को सबके सामने माँगना होगा।

चाची (सहमकर) नही-नही, दिनेश, ऐसा न करना। गजब हो जायगा।

दिनेश तो क्या मैंने दया का हाथ यूही पकडा है ? चाची जी, मैंने इश्क नही, अहद किया है।

चाची (रुक-रुककर) तू दया को ?

दिनेश मैं दया को अपनी बनाऊगा और आज के लिए नही, कल के लिए नही, जिन्दगी की उस घडी तक के लिए, जब तक किसी को अपनी बनाए रखना अपने वस मे होता है।

चाची (अशुभ बात पर टोकते हुए) कैसी बाते करता है ! तू लाख बरस जिये !

दिनेश (बहुत गभीर होकर) तो मुझे दया दिला दो।

चाची कैसे ? तू जानता है दया रिश्ते मे तेरी क्या लगती है ?

दिनेश . (थोडा झुझलाकर) क्या लगती है ?

चाची अनजान मत बन, दिनेश ! यह लगभग नामुमकिन होगा।

दिनेश नामुमकिन को मुमकिन बनाना होगा, चाची !

चाची पर कैसे ? सब मान जाएगे, पर दादीजी नही मानेगी।

दिनेश उन्हे क्या एतराज ?

चाची उन्हे हर तरह का एतराज होगा।

दिनेश लेकिन सिर्फ पुरानी प्रथा के हिसाब से ?

चाची वह पुरानी प्रथा ही को मानती हैं।

दिनेश पर मैं उसे नही मानता।

चाची लेकिन तुम्हारे न मानने से वह मानना नही छोडेगी।

दिनेश तो उनके मानने से मैं भी मानना शुरु नही करुगा। मैं पुराने खयालो को सोच की सीमा या अपने ख्याल की हद नही मानूंगा। मैं बगावत करुंगा।

चाची (उसे गौर से देखकर और स्थिति की अनिवार्यता समझकर) तूने दया से पूछ लिया है?

दिनेश यकीन हो जाने पर पूछने की जरुरत रह जाती है?

चाची तो फिर दया के पिता से बात कर डाल और बिना देर किए।

दिनेश : क्यो?

चाची फिर शायद समय न रहे।

दिनेश क्यो?

चाची दादी जी दया की शादी की बात चला रही हैं।

दिनेश क्या?

चाची आज ही दादी जी रिश्ते की बात करके आयी है।

दिनेश कहा?

चाची पूरी बात नही बताई पर उन्होने फैसला कर लिया है। अब सिर्फ दया के पिता ने हा करनी

है।

दिनेश नहीं-नहीं, यह नहीं होगा। मैं उनसे आज ही बात करूँगा। मैं पिता जी से भी बात करूँगा।

पिता (प्रवेश करके विनोदपूर्वक) क्या? क्या बात करनी है मुझ से?

दिनेश (चाची की तरफ देखता है। चाची नजर मिलते ही अन्दर चल देती है। दिनेश पिता की तरफ बढ़ता है। कुर्सी बढ़ाते हुए) पिता जी, मुझे आपसे कुछ अर्ज करना है।

पिता (विनोदपूर्वक) और वह इतना जरूरी है कि मुझे साँस लेने भी न दिया जाए? (कुर्सी पर बैठते हुए) तो कहो, हमारा बेटा आज कौनसी लकीर से हटना चाहता है।

दिनेश पिता जी पिता जी, मैं शादी करना चाहता हूँ।

पिता (बड़े जोर से हँसकर) शुक्र है कि हमारा बेटा एक तो पुराने ढंग का काम करना चाह रहा है।

दिनेश (तेजी से) मैं दया से शादी करना चाहता हूँ।

पिता (शुरू में न समझकर) क्या? दया से? (चौंक-कर) अपनी दया से? (हाथ से घर की तरफ इशारा करके)

दिनेश जी हाँ।

पिता तुम क्या कह रहे हो, बेटे। दया तो तुम्हारी

दिनेश	दया मुझे पसन्द है ।
पिता	लेकिन दया
दिनेश	(बिना उनकी तरफ देखे) जिसे देखा है, परखा है, पूरी तरह जाना है—वही शादी के लिए सबसे मुनासिब है ।
पिता	लेकिन यह मुनासिब का नहीं, रिश्ते का सवाल है ।
दिनेश	लेकिन दया के पिता को हमने रिश्तेदार नहीं समझा है । जो दूर का रिश्ता था उसे अमीरी-गरीबी के फर्क ने खत्म कर दिया ।
पिता	लेकिन इसका फैसला मैं और तुम नहीं कर सकते ।
दिनेश	तो कौन करेगा ?
पिता	तुम्हारी दादी
दिनेश	आप दादी जी से पूछेंगे ?
पिता	इस घर में उनसे पूछे बिना आज तक कुछ नहीं हुआ है ।
दिनेश	और होगा भी नहीं ?
पिता	तुम जानते हो वह मेरी सगी मां नहीं हैं ?
	[एक क्षण के लिए दिनेश की गर्दन झुक जाती है]
पिता	और यह भी मालूम है कि जब उनकी शादी हुई थी तो मैं और तुम्हारे चचा छः और चार साल के थे । तब उन्होंने मुझे और तुम्हारे चचा को गोद में लेकर पिता जी से कहा था—मेरे दो

वच्चे हैं। मुझे और वच्चे नही चाहिए। आज भी उनके ये दो ही वच्चे है।

दिनेश : लेकिन इससे उनका फैसला हर वात मे आखिरी नही हो जाता।

पिता . मेरे लिए हो गया है। मैंने सिर्फ एक वार उनके कहे को टाला है—और वह जव तुम्हारी माँ के गुजर जाने के वाद उन्होने मुझसे दूसरी शादी करने को कहा था। मैं दूसरी वार ऐसा नही करूँगा !

दिनेश और वह न मानी

पिता तो मेरे लिए वात खत्म हो जाएगी।

दिनेश तव आप उनसे न पूछियेगा।

पिता खिलाफ नही जा सकता, पर वात तो कर सकता हूँ। (आवाज देता है) अम्मा !

दादी (अन्दर से) क्या है रे ?

पिता : अम्मा, जरा यहाँ आओ !

दादी (अन्दर से) अभी ?

पिता हाँ, अम्मा !

[दादी कमरे मे आती है, दिनेश खडा हो जाता है।]

दादी (दिनेश के पिता से) तू कव आया ? (पिता उन्हे कुर्सी पर विठाते हैं। वैठते ही दादी की नज़र दिनेश पर पडती है।) यह कैसे खडा है ?

पिता अम्मा ! यह तुमसे कुछ कहना चाहता है।

दादी क्या ?

पिता दिनेश ! अपनी दादी जी से कह दो !

[दिनेश चुप रहता है।]

दादी . क्या बात है ?

पिता कहते क्यो नही ! अगर करेगी तो यह करेगी !

दादी क्या करना है ?

पिता बोलते क्यो नही ?

दिनेश (तिरछा होकर पर सिर तानकर) आप बता दीजिए !

दादी (सख्ती से) क्या बात है ?

पिता . यह दया से शादी करना चाहता है !

दादी (जैसे किसी ने डक मार दिया हो, कुर्सी से उठ खडी होती है) क्या ? दिमाग तो खराब नही हो गया? चील की बीट तो नही खा ली है बाप-बेटो ने ?

पिता (गर्दन झुकाकर) कभी-कभी बेटे के खोदे का भरना पड जाता है, अम्मा ?

दादी (भडककर) तू भरेगा ? (उठ खडी होती है।)

पिता लेकिन आपके बिना

दादी (एक कदम पीछे हटकर) क्या ? पाप के इन पोतडे मे तू मुझे भी लपेटना चाहता है ?

पिता : पाप के पोतडे मे ?

दादी अरे, अपने बेटे की शादी की बात अपनी ही बेटी से

पिता दया मेरी बेटी नहीं है।

दादी क्या ? दया का बाप रामप्रसाद तेरा भाई नहीं है ?

पिता आप दूर के रिश्ते की बात कर रही हैं।

दादी रिश्ता दूर का हो या पास का, रिश्ता होता है !

पिता : मगर दया के पुर्खे हमारे सगे भी नहीं थे।

दादी सौतेले थे ?

पिता हाँ !

दादी जैसे मैं सौतेली हूँ ?

पिता (चौंककर) अम्मा !

दादी आज बेटे के मारे तू सगे-सौतेलों में भेद करने चला है ? उनको अपना मानने से इनकार करता है जो सगे नहीं हैं !

पिता : (बौखलाकर) यह बात नहीं है, अम्मा ! शादी में खून बचाने की बात होती है न

दादी (तीव्र और कटु व्यंग्य से) और खून बच गया ? यानी अगर मेरे कोई बेटी होती तो तू उससे भी !

पिता (काँपकर) अम्मा ! भगवान के लिए आगे कुछ न कहना। मैं कुछ नहीं कहूँगा !

दिनेश (पलटकर) लेकिन मैं कहूँगा ! यह खून बचाने की बात बिलकुल बकवास है !

दादी (क्रोध से) क्या ?

पिता (ज़ोर से, टूटे स्वर में) तू खामोश हो जा,

दिनेश ।

दादी : यह खामोश क्यो होगा। अपनी वहन से जो !

दिनेश · (भावावेश से मुट्ठी भींचकर) क्या मेरी वहन नही है।

दादी : (उतने ही ज़ोर से) वह है।

दिनेश वह नही है, क्योकि वहन वह होती है जो वाप के पराग से फूटती है, माँ की कोख से उगती है।

दादी और जो रिश्ते की होती है ?

दिनेश वह नीम और शीशम के उन पेडो की तरह होती है जो पास-पास और नीम और शीशम होते हुए भी एक-दूसरे के भाई-वहन नही होते।

दादी मगर यह आदमियो की वात है। उनकी शादियाँ नही हो सकती।

दिनेश क्यो नही हो सकती ?

दादी क्योकि शास्त्र नही कहते।

दिनेश किसलिए नही कहते ?

पिता : (तनिक क्रोध मे आकर) दिनेश, इनसे वहस न करो। शास्त्रो की हर वात के पीछे कारण होता है।

दिनेश इसके पीछे क्या कारण है ?

पिता शायद यह है कि एक ही खून मे शादी करने से नस्ल कमजोर हो जाती है।

दिनेश गलत ! मुसलमानो मे यह रिवाज है। अंग्रेज़ो मे रिवाज है। उनकी नस्ल कमज़ोर हुई है ?

दादी . मैं अपने धर्म की बात करती हूँ ।

दिनेश मैं भी उसी की बात करता हूँ । अगर शास्त्र नस्ल अच्छा बनाने की खातिर ही ऐसा कहते है तो फिर वे अपनी ही जात और अपने ही धर्म मे शादी करने को क्यो कहते है ? क्यो नही कहते दूसरी जातो, दूसरे धर्मो और दूसरी नस्लो मे शादी करने को ? ताकि खून ज्यादा से ज्यादा बच सके ? नस्ल अच्छी से अच्छी बन सके ?

दादी तुझे बनानी है तो तू बना । दया छोड किसी मेहरी-कहारी से शादी कर ले ।

दिनेश कर लेता (अपने पर सयम करते हुए) अगर मुहब्बत हो जाती । लेकिन मेरा फैसला हो चुका है । मैं शादी करूँगा तो दया से करूँगा, वरना नही करूँगा ।

दादी तो न कर । तेरे क्वारा रहने से यह दुनिया खाली न हो जाएगी ।

पिता अम्मा

दादी (उसकी तरफ बढते हुए) ओह ! बेटे के शादी न करने की बात सुनते ही हिया काँप उठा । निर्वंश रह जाने की बात सुनते ही मन डोल उठा ! तो कर ले शादी ! ब्याह दे बेटे को अपनी ही बेटी से ! (जाने लगती है ।)

पिता अम्मा ! (पकडने की कोशिश करता है ।)

दादी (झटके से हाथ हटाकर) मुझ मत छू ! मैं अब

इस घर का पानी भी नही पीऊँगी । जहाँ वद-
माशी पलेगी, मैं घडीभर न रहूँगी ।

[दादी चली जाता है। पिता की गर्दन झुक जाती है।
कुछ देर तक दिनेश पिता की तरफ देखता है ।]

दिनेश : आपका फैसला भी यही है ?

पिता मैंने पहले ही कह दिया था। कोशिश कर
सकता हूँ।

दिनेश खिलाफ नही जा सकते ?

पिता नही।

दिनेश (सकल्प करके) तो मुझे जाना होगा। दया के
लिए मै घर छोड दूंगा।

पिता (गिरे स्वर मे) छोड सकते हो, बेटे ! (खडे
होकर) मैं कोशिश ही कर सकता था, मैंने
कर ली।

[पिता हौले-हौले अन्दर चले जाते है। उनके जाते
ही दिनेश तेजी से पलटता है और अपने कपडे समेटकर
सूटकेस मे डालने लगता है। तभी चाची अन्दर आती
है और उसके हाथ से कपडे छीनती है।]

चाची यह क्या पागलपन कर रहा है ?

दिनेश चाची, मै अब इस घर मे नही रहूँगा।

चाची क्यो नही रहेगा ? यह घर तेरा है।

दिनेश मेरा नही है। जहा मेरी मुहब्बत के लिए जगह
नही है, वह घर मेरा नही हो सकता।

चाची तो अपना हक छोडकर भाग रहा है ?

दिनेश . मैं भाग नही रहा, चाची, आजाद हो रहा हू। मैं मारे बन्धन तोडकर दया को हासिल करूगा।

चाची यहा रहकर नही कर सकता ?

दिनेश : नही। मैं पिता जी के लिए मुश्किल नही बनूगा।

चाची उनके लिए क्या मुश्किल बनोगे ?

दिनेश आपने सुना नही—जब तक मै इरादा नही बदलूंगा, दादी जी घर का पानी भी न पियेगी।

चाची (आवेश मे) न पिये।

दिनेश और जब तक वे नही पियेगी · (गहरा सास लेकर) पिता जी नही पियेगे। (चाची की गर्दन झुक जाती है।) इसलिए मुझे जाना होगा।

चाची नही-नही। यह नही होगा। हमारे होते हुए तुम इस घर से नही जा सकते। तुम अपने चाचा जी को तार दो।

दिनेश कोई फायदा नही, चाचीजी। दादी जी के आगे कोई न बोल सकेगा।

चाची (निरुत्तर होकर) लेकिन यह कैसे हो सकता है कि घर का बेटा

दिनेश बेटा आसमान चाहेगा तो उसे जमीन छोडनी ही होगी, चाची। तुम चिन्ता न करो। सिर्फ दया को मेरा एक सन्देश दे देना।

चाची (विह्वल होकर) नही-नही। तू इस तरह नही जा सकता। (दरवाजे की ओर जाते हुए) मैं

दया को बुलाती हूँ।

दिनेश (घबराकर) चाची जी! दया को यहाँ न बुलाना। दादी जी ने देख लिया तो गजब हो जाएगा!

चाची (रुककर) इससे बड़ा गजब और क्या होगा? (जाते हुए) तुझे मेरी कसम जो जाए! मैं दया को भेजती हूँ।

[चाची चली जाती है। दिनेश के हाथ ढीले पड़ जाते हैं मगर वह कपड़े उठाकर सूटकेस में रखता रहता है। सूटकेस का खटका बन्द करता है कि दया दरवाजे में दिखाई देती है।]

दिनेश दया! (उसकी ओर बढ़ते हुए) मेरी दया!

दया (दया आगे आती है) यह आपने क्या किया? क्या कर दिया!

दिनेश (बहुत ठहरे स्वर से) जो मुझे करना चाहिए था।

दया (विचलित) नहीं-नहीं! आपको ऐसा करना नहीं चाहिए था। मैं इस लायक नहीं हूँ।

दिनेश (स्वर धीमे से तेज होता जाता है।) तुम इस लायक हो कि तुमसे इश्क किया जाए। तुम इस लायक हो कि तुमसे घर का काम कराया जाए। पर तुम इस काबिल नहीं कि (तीव्र स्वर) तुमसे शादी की जाए?

दया (भय और निराशा से बैठते हुए) हाँ! मैं इस

काबिल नहीं हूँ।

दिनेश (तेजी से आकर उसे उठाते हुए) तुम्हारे आत्म-सम्मान को हुआ क्या है ? तुम क्यों अपने को दुनिया के जब्रो-सितम का शिकार बनाना चाहती हो ?

दया मैं यह घर उजाड़ना नहीं चाहती।

दिनेश (क्रोध-मिश्रित आवेग) या बसाना नहीं चाहती ?

दया (चौंककर देखती है। फिर उसकी कमीज का सामना पकड़कर) ऐसे न सोचो ! तुम्हें मालूम है दादी जी अड़ गई है।

दिनेश और मैं ?

दया पर जरा सोचो तो मुझमें ऐसा क्या है ?

दिनेश जिसकी खातिर कोई यह फर्श, यह छत, ये दीवारें छोड़ दे ? (बाँहों से पकड़कर) दया, लोग कहते हैं जिन्दगी नहीं छोड़ी जाती (उसे छोड़कर और पलटकर) मैं यह भी छोड़ दूँगा।

दया नहीं-नहीं। ऐसे न सोचो, ऐसे न सोचो !

दिनेश मैं सोच चुका हूँ। हाँ, तुम छोड़कर जाना चाहती हो तो चली जाओ।

दया (उसकी पीठ पर अपना चेहरा टिकाकर, आँसू बहाते हुए) ओह, दिनेश ! यह तुमने क्या सोच लिया, क्या सोच लिया ?

[तभी दादी अन्दर दाखिल होती है।]

दादी . नागिन ! मेरे ही घर मे, मेरे ही अनाज पर पल-
कर, मेरे ही डंक मारने चली है ! (उसकी बाँह पकड़कर) तू जरा अन्दर चल !

[उसे घसीटकर अन्दर ले जाना चाहती है कि दिनेश तेजी से बढ़कर रास्ता रोक लेता है।]

दिनेश दादी जी ! इसे छोड़ दीजिए।

दादी क्या ?

दिनेश दया को छोड़ दीजिए।

दादी तेरे बदमाशी करने के लिए ?

दिनेश जिस लफ्ज के माने आपको मालूम नही, उसे इस्तेमाल न कीजिए।

दादी तुझे तो मालूम है। चल अन्दर (खींचती है)।

दिनेश मैं कहता हूँ दया को छोड़ दीजिए।

दादी एक तरफ हट जा !

दिनेश नही ! इसे मैंने बुलाया है। मुझे कहिए।

दादी मैं दोनों को भुगतूँगी। (दया को खींचती है।)

दिनेश (दया का हाथ पकड़कर) नहीं !

दादी उसका हाथ छोड़ दे !

दिनेश नहीं।

दादी नही छोड़ेगा ?

दिनेश नही।

दया (रोकर) मेरा हाथ छोड़ दीजिए।

दिनेश तुम खामोश रहो।

दादी (क्रोध से पागल होकर) दया (तड़ाक से

दिनेश के एक तमाचा मारती है और दया को छीनकर ले जाना चाहती है कि दिनेश झपट-कर आगे बढ़ता है और दादी का हाथ पकड़-कर जोर से छुड़ाता है।)

दिनेश इसे छोड़ दो!

दादी (दया को छोड़कर पर क्रोध से काँपते हुए) तूने मुझे हाथ लगाया? तेरी यह हिम्मत! (तभी दिनेश के पिता अन्दर से आते हैं।) आज इस घर मे मेरी यह इज्जत रह गई! (क्रोध से काँपती हुई उंगली उठाकर) तेरा यह बेटा (अपनी छाती को ठोककर) मेरे हाथ लगाए! अब मैं इस घर मे एक घड़ी नही रहूँगी! (बाहर की तरफ बढ़ती है।)

पिता . (रोकने के लिए आगे आकर) अम्मा!

दादी हट जाओ! (आगे निकल जाती है।)

पिता (फिर आगे जाकर) अम्मा!

दादी नही! अगर मैं अपने बाप की बेटी हूँगी

पिता (घुटनों पर गिरकर रोते हुए) अम्मा! अम्मा! आगे कुछ न कहना, वरना मैं जीते जी मर जाऊँगा। (हाथ पकड़े रहता है पर गर्दन झुकाकर सिर दादी की टाँगों से लगा लेता है।)

[illegible] (जहर का घूँट पीने की क्षमता आ जाती है) दिनेश, अगर तूने मुझे चाहा है, चाहते हो, तो तुम [illegible] (लगभग रो पड़ती है)

दिनेश · (टोकते हुए) दया !

दया (रोते हुए) कि आज के बाद तुम मेरी मूरत नही देखोगे।

दिनेश (जोर से) दया !

दया (रोते हुए) दया मर गई (दादी की ओर जाते हुए) दादी जी, मेरा जो चाहो कर लो ! (घुटनो के बल बैठकर गर्दन झुका देती है और आखे मूंद लेती है।)

दिनेश (चीखकर, अन्तिम बार जैसे सचेत करता है, जगाता है) दया !

दया दया अब नही है!

दिनेश (जहर पीकर, मगर तनकर) तो ठीक है ! (सूटकेस उठाकर जाते हुए दया के पास रुक-कर) अगर दया नही है तो दिनेश भी नही है ! (और तेजी से बाहर चला जाता है)।

दूसरा अंक

[मामूली से मकान का आँगन। चारपाई पर एक अधेड़ उम्र का आदमी बनियान-धोती पहने बैठा है और चिलम पी रहा है। कुछ देर हुक्का पीकर आवाज देता है।]

रामदयाल (चिढ़े स्वर में) अरी चार बदाम भी पिसे कि नहीं ?

दया (जल्दी से बाहर आकर) जी, पिस गए। (गिलास देती है, साथ ही खाँसती है।)

रामदयाल (उसके शब्द दोहराकर) जी पिस गए! साला कोई काम जल्दी नहीं होता। (दया को अन्दर जाते देखकर) वह मेरा कुरता दे जा और अगर सब्जी मँगानी है तो थैला भी ले आ।

[दया अन्दर जाती है। वह ठंडाई पीता है। पीकर उठता है कि दया अन्दर से आकर उसे कुरता और दो थैले देती है।]

रामदयाल (दूसरा थैला देखकर) यह दूसरा थैला किस लिए है ?

दया (गरदन झुकाकर) आटा नहीं है।

रामदयाल (भड़ककर) क्या गेहूँ खत्म हो गए ?

दया	पिने नही है।
रामदयाल	क्यो ? चक्की फिर खराब कर दी ?
दया	मुझसे पीसा नही गया।
रामदयाल	(चिढकर) तुझसे होता क्या है ! (कुरता पहनते हुए) न काम की, न धाम की, बस कभी कमजोरी, कभी बुखार (दया खांसती है) और एक यह खांसी है कि साली हर वक्त ठनकती रहती है ! (बटन लगाते हुए) वैद्य जी की पुड़िया खा रही है ?
दया	खा रही हूँ।
रामदयाल	और कोई फायदा नही ?
दया	अभी तो नही।
रामदयाल	और होगा भी नही। तुझे डाक्टरो की दवा जो चाहिए।
दया	(पहली बार जरा तमककर) मैंने कब कहा ?
रामदयाल	तू तो लाख बार कहे, अगर मैं मानू। चली ही गई थी अस्पताल।
दया	मैं कहा जाती थी। पड़ोस के डाक्टर की बीवी जबरदस्ती ले गई थी।
रामदयाल	वह क्यो न ले जाएगी। साले डाक्टरो का व्यापार जो चलना है।
दया	(सफाई में) वह मुझे सरकारी अस्पताल ले गई थी।
रामदयाल	कहा दे तेरे [illegible] की बात कहते हैं कि [illegible]

न करो, फल खाओ, महारानियों की तरह पलंग पर लेटकर, सारा दिन मुस्कियाओ। (दया अन्दर जाने लगती है। रामदयाल खाली गिलास उठाकर उसे देते हुए) अगर हाथ न घिसें तो दाल पीस लीजो—दो दिन से भीगी पड़ी है। (दया गरदन हिलाकर अन्दर चली जाती है। रामदयाल कुरता पहनकर बाहर जाते हुए) मैं तो साला (जाते-जाते मूढ़े से टकराता है) लुगाइयों को राज खजाने को रह गया हूं। (दया अन्दर से सिल-बट्टा लाकर बाहर रखती है कि चाची अन्दर आती है)

चाची दया!

दया (उठकर आगे बढ़ते हुए) चाची जी! (गले मिलने के बाद मूढ़ा उठाने जाती है कि चाची रोक लेती है।)

चाची न न, मैं ले लूंगी! (मूढ़ा लेकर बैठते हुए) यह मैंने क्या सुना?

दया (दूसरी तरफ आंखें करके) क्या?

चाची कि अस्पताल वालों ने तुझे दिक बताई है।

दया (बैठते हुए) भगवान करे उनकी जिह्वा पर सरस्वती हो!

चाची कैसी भका बोलती है।

दया मेरे लिए तो यह आशीर्वाद है, चाची जी!

चाची (उठकर) मैं जाऊं तो?

दया (रोककर) आप भी रूठ जाएँगी ?

चाची फिर ऐसी बात क्यों कहती है ? क्यों नही बताती डाक्टर ने क्या कहा है ?

दया यही कि फेफडों की दिक है।

चाची हाय ! (सिल-बट्टे की ओर इशारा करके) और तू यह सब कुछ कर रही है ! तू घर चल और आराम कर।

दया . (उन्हे बिठाते हुए) बस, अब आराम ही आराम करूँगी।

चाची दया ! तुझे हुआ क्या है ? तूने तब भी !

दया (तडपकर) तब की बात न करो, चाची जी !

चाची नही करती। पर दया, तुझे अपना ख्याल रखना होगा, इलाज कराना होगा।

दया (गहरा सांस छोडकर) करा रही हूँ।

चाची किसका ?

दया (चाची की तरफ देखकर) इतनी चिन्ता क्यों करती हो ? तुम्हारी दया इतनी जल्दी मरने वाली नही है।

चाची (मुह पर हाथ रखकर) तू नही मानेगी।

दया अच्छा, अब यह भी नही कहूँगी ! वहां तो सब ठीक है ? दादी जी

चाची मेरे सामने उनका नाम न लो।

दया उनसे नाराज क्या होना।

चाची तो किससे होना ? यह [illegible] ?

दया . मेरा ! (उठकर दाहिनी तरफ जाते हुए) डाल पर आजाद बैठी थी, समय पर नही उडी तो पिजरे का, पकडने वाले का क्या दोष ?

चाची पर हुआ तो सब उनकी वजह से। न वह अडती

दया क्यो न अडती ? मैं रिश्ते की थी। इस पर उनके घर के लायक न थी।

चाची इस घर के लायक थी ?

दया (हल्के कटु हास्य से) और क्या—बाप मुनीम, आदमी मुनीम ! इससे ज्यादा क्या मिलता ?

चाची ठीक है। जब तूने दिनेश की नही सुनी, तो मेरी क्या सुनेगी ? मरने की ठान ही ली है तो मर जा !

दया जी भी जाऊँ तो क्या फर्क पडता है ?

चाची मैं तुझे आज तक नही समझ सकी, दया ! जब तू अपनी जान यू गला सकती है, मौत की भट्ठी मे यू ताप सह सकती है, तो तूने जीने की हिम्मत क्यो नही की ?

दया (बहुत गहरा साँस लेकर) चाची ! आज मर जाऊगी तो कोई यह तो न कहेगा—हमारा ही नमक खाकर हमे दगा दे गई। अपना घर बसाने की खातिर हमारा घर बिगाड गई।

चाची वह घर बसा हुआ है ? उस दिन का गया दिनेश आज तक नही लौटा है। कितना-कितना समझा लिया पर उसने उस घर मे कदम नही रखा है।

दया मुझे मालूम है।

चाची कोई कह लेता तो क्या कर लेता ? दया, हिम्मत कर लेती तो, कुछ न होता।

दया टूटा हुआ काच कुरेदने से हाथ ही कटता है, चाची जी ! कोई और बात करो।

चाची और क्या बात करूँ, दया ?

दया (बात बदलने के लिए) इतनी दूर चलकर आयी है, प्यास लगी होगी !

चाची (उठकर, बहुत खिन्न मन से) नही, अब मैं जाऊँगी।

दया क्यो, क्या हुआ ?

चाची कुछ नही ! मुझसे बैठा न जाएगा।

दया चाची जी !

चाची (बहुत उदास और भावातुर होकर) मुझे जाने दे, दया ! फिर आ जाऊँगी।

दया लेकिन

चाची तुझे मेरी कसम, दया अब जाने दे।

[दया उन्हें जाते देखती है। फिर धीरे-धीरे सिल-बट्टे की तरफ जाती है कि इतने मे रामदयाल अन्दर आता है।]

रामदयाल (बाहर की तरफ देखकर जोर से) अन्दर आ जाओ, पंडित जी !

[दया आँचल ठीक करके अन्दर चली जाती है।]

पंडित (रामदयाल चारपाई खींचकर आगे करता है। पंडित जी 'हरे-हरे' करते हुए बैठते हैं) कुशल-

मंगल तो है यजमान ?

रामदयाल अजी खाक कुशल-मंगल है। पहले तुम यह बताओ कि तुम यह साले टेवे कैसे मिलाओ हो ?

पंडित टेवे ?

रामदयाल हाँ।

पंडित क्यों, क्या हुआ ?

रामदयाल पहली का टेवा मिलाया था, वह चल बसी और अब यह भी (अन्दर की ओर इशारा करके) खाट पर धरी है।

पंडित इन्हें क्या हुआ ?

रामदयाल एक हो तो बताऊं। लुगाई क्या, रोग की पुड़िया लाया हूं।

पंडित कुछ काया-कष्ट है ?

रामदयाल (तार पर लटका तौलिया उतारता है) उसे तो क्या, मुझे है। मुझे तो दीखे है कि मैं साला लुगाइयों को कन्धा देने को रह गया हूं (मुंह पोंछता है।)

पंडित हरे-हरे! कैसे अशुभ वचन मुंह से निकाल रहे हो! भगवान सब भला करेंगे।

रामदयाल मेरा तो नहीं, तुम्हारा जरूर भला करेंगे। फेरे फिराई के तुम्हारे टके फिर खरे हो जाएंगे।

पंडित यह क्या कह रहे हो, यजमान ?

रामदयाल जो दीखे है। बिना लुगाई के रहा नहीं जाएगा। तीसरी शादी कराऊंगा तो तुम्हारी दक्षिणा फिर खरी।

पंडित नहीं-नहीं! ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने तो पत्री चल की तरह ठीक कर मिलाई थी। तनिक दोनों पत्री लाना।

[रामदयाल पत्री लाने को जाता है। पंडित अपना पत्रा खोलता है। रामदयाल टेवा लाकर देता है। पंडित दोनों को देखता है। फिर विचारता है।]

रामदयाल क्यों क्या लिखा है?

पंडित . (गंभीर होकर गरदन हिलाते हुए) ग्रह है! काया-कष्ट है!

रामदयाल पर आप तो कहते थे

पंडित यजमान ग्रह बदलते रहते हैं। मंगल इनके आयु-ग्रह में आन खड़ा हुआ। रोग लम्बा चलेगा।

रामदयाल मारकेश तो नहीं है?

पंडित भय है!

रामदयाल (भड़ककर) तो तुमने पत्री ताक मिलाई? हर बार मेरे गले मुर्दघाट का माल डाला।

पंडित यजमान भागों के भोग हैं। उस समय मारकेश नहीं था। तुमसे ब्याह होते ही ग्रह बदल गए। पर ग्रह-निवारण हो सकता है।

रामदयाल इसके लिए जाप करोगे?

पंडित हाँ! इक्कीस दिन के

रामदयाल (उठकर) ना ना महाराज मेरे पास नाना है, दो-दो बार लूटना। एक [illegible] [illegible] फिर मारो मरे! (उठकर) मुझे तो अभी [illegible]

लाकर देनी है।

पंडित मुझे भी एक यजमान की ओर जाना है। (जाने के लिए उठते हुए) वैसे मैं और विचारूँगा।

रामदयाल . (उनको साथ बाहर ले जाते हुए) मगर महँगा मत विचारना, महाराज। मेरी वैसे ही कमर टूटी हुई है।

[दोनों जाते है। दया अन्दर से आकर दाल पीसने बैठ जाती है। उसे खाँसी आये जाती है। एक बार उसे इतने जोर की खाँसी आती है कि वह मुँह को पल्लू मे ढाँपकर खाँसती है तो दिनेश अन्दर आता है। खाँसने के बाद ज्यो ही दया मुँह उठाती है, उसकी नजर दिनेश पर पडती है। चौंककर वह उठ खडी होती है।]

दया तू तुम यहाँ!

दिनेश हाँ, दया!

दया पर मैंने तुम्हे ·

दिनेश कसम दिलाई थी मैंने खाई भी थी। पर आज अपने को रोक न सका।

दया लेकिन क्यो ?

दिनेश क्यो ? तुम बीमार हो!

दया नही! मुझे कुछ नही हुआ है। बस खाँसी है, हल्का बुखार है। कमजोरी है सो चली जाएगी। (घबराकर दरवाजे की ओर देखते हुए) अब आप चले जाइए! (दिनेश बडी उदास, मजबूर निगाहो से देखता है। दया नजरें

झुकाकर) आप चले जाइए। अगर किसी ने देख लिया

दिनेश जानता हूँ। इसीलिए इतने दिन बीत जाने पर भी एक बार इधर नही आया। अपने सीने मे मुलाकात की सुलगती हुई ख्वाहिश को गुनाह के खयाल की तरह दबाता रहा। पर आज जब आ ही गया हूँ

दया नही-नही आप चले जाइए। चले जाइए।

दिनेश चला जाऊँगा लेकिन एक पल के लिए तो उस चेहरे को निहारने दो, जिसमे कभी मैं अपनी दुनिया बसाने चला था।

दया (मुँह फेरकर और भावनाओ को पूरी तरह दबाकर) वह चेहरा मर गया है। मिट गया है।

दिनेश वह मरा नही है। वह मेरी आँखो के आकाश मे बस गया है। हर शाम वह मेरी यादो के झुरमुटो के पीछे से चाद की तरह निकलता है और रातभर मेरे ख्वाबो की खिड़की मे अटका मुझे उन्ही निगाहो से तकता रहता है। (दया पलटकर उसकी तरफ देखती है।) मैने लाख चाहा है, मैं लाख चाहूँगा पर वह सब कुछ कभी न भुला सकूँगा।

दया लेकिन अब कुछ दिनो की बात है—फिर सब कुछ मिट जाएगा—राख हो जाएगा।

दिनेश क्योंकि तुम्हे दिक हो गई है ?

दया हाँ ! दिक ने कब किसको बख्शा है।

दिनेश गलत ! अब दिक ऐसी बीमारी नही है। वह नब्बे फीसदी सूरतो मे ठीक हो जाती है।

दया पर मेरे सिलसिले मे ऐसा नही होगा।

दिनेश क्योंकि तुम इलाज नही कराओगी ? आराम नही करोगी ?

दया सब करके देख लिया।

दिनेश (सिल की तरफ इशारा करके) यह आराम है ? वैद्य की पुडिया इलाज है ? दिक का इलाज सिर्फ डाक्टरो के पास है। तुम डाक्टरो के पास जाओ।

दया जाऊँगी। (उठती है)

दिनेश (सामने पहुँचकर) तुम नही जाओगी। मुझे मालूम है तुम जीओगी नही, दूसरा जिलाएगा नही।

दया (जाते हुए) अच्छा है ! तन की कारा से मुक्ति मिल जाएगी।

दिनेश दया !

[दया दिनेश की तरफ देखती है।]

दिनेश (उसके पास जाते हुए) तुम दुखी हो ?

दया तुम सुखी हो ?

दिनेश (तडपकर) दया !

दया तो फिर मुझसे क्यो पूछते हो ? क्या है जो

मैंने तुमसे नही कहा ?

दिनेश ऐसी बात नही है, दया ! पर मैंने सोचा शायद

दया मैं सुखी हो जाऊँ ? वह सब कुछ भूल जाऊँ जिसने मुझे दिन की घडियो मे सपने और रात के बे-कल पलो मे तारे गिनवाए ? एक पल मे अमृत और एक छिन मे जहर के घूंट भरवाए ? क्या तुम मुझे ऐसी समझते हो ?

दिनेश नही-नही, दया, मैं ऐसा नही समझता। मैं समझता हूँ वह क्या मजबूरी थी जिसने तुम्हें यूं मजबूर किया ?

दया पर काश मैं यूं मजबूर न होती ! गला घोंट लेती, जहर खा लेती !

दिनेश तब क्या होता ?

दया इस यातना से बच जाती।

दिनेश और मै ? (दया हैरानी से देखती है।) दया आज तुम मेरे पास नही हो। मेरी नजरो से नींद की तरह दूर हो। लेकिन एक सहारा तो है कि तुम जहां भी हो मेरे खयाल से गाफिल नही हो।

दया दिनेश !

दिनेश सच, दया ! जानता हूँ तुम मेरी नही हो सकती। मैं तुम्हें नही पा सकता, पर जाने क्यों लगता है कि जब जिन्दगी ने जो [illegible] दिलों [illegible] न नही [illegible] याद ही [illegible] एक [illegible] मिल जाए। दिल का टूटा हुआ [illegible] तुम्हारी

दमक से हीरे की तरह जगमगा जाए।

दया . ऐसे न कहो दिनेश, ऐसे न कहो। प्यार करके मैंने नही तुमने एहसान किया है। मेरी जिन्दगी मे कुछ नही था, बस एक तुम थे। एक तुम्हारी आँख थी जिसने मेरे लिए आंसू का मोती उगला था। मैंने उस आँसू को मन की अगूठी मे जड-कर अपना शृगार करना चाहा। पर वह भी किसी को न भाया।

दिनेश : पर यह मोती आज भी तुम्हारा है। पलको की दहलीज पर खडा आज भी तुम्हारे सपने देखता है।

दया : जानती हू। मैं जानती हू।

दिनेश · तो क्या मेरी इल्तजा कबूल करोगी ? मेरी एक आखिरी ख्वाहिश परवान चढाओगी ? (जेब मे कुछ नोट निकालकर) अपने इलाज के लिए ले लो।

दया · (तडपकर) नही, दिनेश, नही। मै यह रुपये नही लूगी। नही लूंगी।

दिनेश . दया !

दया : मै कभी नही लगी।

दिनेश : मुझ पराया समझती हो ?

दया पराये न होते, मेरे होते तो मै आज इस हाल मे पडी यू होती ? (चेहरा हाथो मे छिपाकर रो पडती है।) दिनेश, मै बुरी तरह लुट गई हू।

दिनेश — दया ! तुम यूं न रोओ । मैं तुम्हे कुछ नही दूंगा। पर मुझे एक वादा तो दो। वचन दो कि तुम अपने को यूं ही खत्म नही करोगी। जीने की, इलाज कराने की कोशिश करोगी।

दया — (आसू पीकर) करूगी—जितना जहर बचा है उसके घूंट भी भरूगी। पर दिनेश, एक ज़हर का घूंट तुम्हे भी पीना होगा—मेरे सामने न आना।

दिनेश — दया !

दया — हां, दिनेश, तुम्हे देखकर मुझसे कुछ और न देखा जाएगा।

[यकायक बाहर से दादी की आवाज आती है।]

दादी — दया !

दया — (कांपकर) दादी जी ! कही छिप जाइये।

[दया तेजी से अन्दर चली जाती है। दिनेश दरवाजे की तरफ दीवार से चिपक जाता है। दादी आधी की तरह आती है और बिना इधर-उधर देखे कोठरी की ओर बढ़ती है। दिनेश झट से बाहर निकल जाता है।]

दादी — अरी, कहा है तू ?

दया — (कोठरी से निकलकर मूढ़ा लिए आगे बढ़ती है और उनको देती है।) आइये, दादी जी ! (पैर छूने के लिए झुकती है कि खांसी आती है)।

दादी — (पीछे हटकर) यह क्या है ?

दया — जी ?

दादी — खांसी आती है ?

दया   जी।

दादी · और बुखार भी ?

दया   जी।

दादी   और डाक्टर कहते है तुझे दिक़ है ?

[दया चुप रहती है।]

दादी   बोलती क्यों नहीं ?

दया   जी।

दादी   यह किसलिए है ?

दया   जी ?

दादी   यह सब कुछ किसलिए है ? तुझे किसी चीज़ की तंगी है ?

दया   किसी की नहीं।

दादी   आदमी बुरा है ?

दया   जी, नहीं।

दादी   काम बहुत है ?

दया   जी, नहीं।

दादी   फिर तुझे दिक़ कैसे हुई ? कैसे तुझे रहने लगा यह खाँसी-बुखार ?

[दया खामोश रहती है।]

दादी   बता।

दया   मुझे तो नहीं मालूम।

दादी   मैं बताऊँ ?

दया   (सहमकर) जी।

दादी   मैं बताऊँ तुझे क्या है ? तेरे [illegible]

और त्रिया-चिलत्तर के पीछे कौन है ?

दया (काँपकर) दादी जी !

दादी संपोलन ! तू अभी तक उस दिनेश को

दया (काँपकर उनकी तरफ बढते हुए) दादी जी ! मैं आपके आगे हाथ जोडती हूँ उनका जिक्र न कीजिये।

दादी और तू उसका सोग करके अपने को गलाए और मेरी नाक कटाए ?

दया मैं ?

दादी और क्या ? दुनिया तो मुझी पे थू-थू करेगी कि मैंने तुझे ऐसे घर धकेल दिया जहां जाते ही दिक हो गई।

दया (कमजोर आवाज मे) पर मैंने तो किसी से कुछ नहीं कहा।

दादी पर दुनिया तो कह रही है। उस कौशल्या की बच्ची ही ने कह दिया—शादी न करने दो—अब उस बिन-मां की बच्ची का कलेजा गिर रहा है कट-कट के।

दया पर मैंने तो कुछ नहीं कहा। उन्होंने अपने आप कहा होगा।

दादी अपने आप नहीं। पर मेरे मुंह पे तो कालिख पुती। मेरे मत्थे तो हत्या नहीं गई। है कि नहीं ?

बैठिए।

दादी . (बैठकर) रामदयाल तेरा इलाज करा रहा है ?

दया करा रहे हैं।

दादी और फायदा नही होता ?

दया अभी तो नही

दादी और जब तक तुझ पे चडाल चढा है, होगा भी नही ! (दया चौंककर देखती है।) यह तन का नही, मन का रोग है। अपने धर्म से गिरकर जो पाप तूने उस लफगे के साथ किया है

दया (काँपकर) दादी जी, भगवान के लिए चुप हो जाइये ! आपने जो चाहा, मैंने वही किया।

दादी पर अब तो नही कर रही।

दया मैं कर लूगी। मुझे बताइए, मैं क्या करूँ ?

दादी अपना मन शुद्ध करेगी ?

दया कर लूगी।

दादी पूजा-पाठ और व्रत रखेगी ?

दया रख लूगी।

दादी एक-दो दिन के नही—इक्कीस दिन के ?

दया रख लूगी।

दादी तो अगले सोमवार से देवी का पाठ बिठा। इक्कीस दिन के निर्जल व्रत रख। समाप्ति पर खीर-पूरी से ग्यारह बामन जिमा। पंडित आता है ?

दया   आते हैं।

दादी   तो बस यह प्रायश्चित कर। फिर देखूं कि कैसे नही लगती दवा और कैसे नही कटता रोग।

दया   (बात बदलने के लिए) आपके लिए पानी लाऊं ?

दादी . धर्म से गिरी तो अक्कल भी मारी गई ? दादी होकर पोती के घर का पानी पियूंगी ?

[तभी रामदयाल अन्दर आता है। हाथ मे सब्जी का थैला है।]

रामदयाल   अरे दादी जी ! राम-राम ! (आगे बढ़कर पैर छूता है।)

दादी   जीता रह। घर बसा रहे।

रामदयाल   आप कब आयी ?

दादी   बस अभी।

रामदयाल   अरी, कुछ खिलाया-पिलाया भी! (हाथ जोड़-कर) क्या लाऊँ ?

दादी   अरे बेटा, बस तूने मान रखा मुझे सब कुछ मिल गया। (गभीर होकर) मैंने इसे समझा दिया है।

रामदयाल . आपके समझाए समझ जाए तो समझ जाए, मेरी तो एक ना सुनती।

दादी   क्यो ?

खावे है कि फेंके है—ठीक होके ही ना देती।

दादी अरे, अगर काया-कष्ट वैद्य-डाक्टरों से दूर हो जाया करे तो भगवान को कौन पूछे ? इससे कुछ धर्म-करम करा !

रामदयाल अजी धर्म-करम ! इनके नाम पर तो इसे साँप सूंघ जावे है। अबके इसने ककड़िया एकादशी का व्रत भी न रखा।

दादी क्यों री ?

दया मेरा जी ठीक नहीं था।

रामदयाल इसका जी ठीक कब रहे है, इससे पूछो !

दादी खैर, अब तू फिकर न कर। मैंने इसे बता दिया है। अगले सोमवार से देवी का इक्कीस दिन का पाठ चलेगा। यह निर्जल व्रत रखेगी। तू रोज सुबह मुट्ठीभर बाजरा छत पर कबूतरों को डाल आया कर। जैसे-जैसे वे दाने चुगेंगे, इसका रोग तिल-तिल करके घटता जाएगा।

रामदयाल और इलाज ?

दादी सब बन्द ! ये मरे वैद्य राख चटावे है और डाक्टर सुइयें बींधे है। तू पाव भर गवाराना, छटांक मुनक्के, पाव मिश्री और मुट्ठी-भर मुलेठी ले आ। दूध के साथ गवाराना और मुनक्के दे। मिश्री और मुलेठी यह मुंह में डाले रहे। फिटकरी चटका के मैं भिजवा दूंगी। बस फिर देखियो कि कैसे टिके बुखार और [illegible]

से आवे खाँसी ।

रामदयाल (दया से) सुन लिया ? (फिर दादी से) उन सुसरे अस्पताल वालो को यह न जाने क्या भडका आयी कि हर सातवे दिन आन धमके है कि इने अस्पताल भेजो । काम बिलकुल न कराओ । दूध, दही और मक्खन खिलाओ ।

दादी अब के आएँ तो मरो को पकडकर चौंके मे बिठाइयो कि रोटियाँ तुम सेको ।

डाक्टर (तभी बाहर से आवाज आती है) रामदयाल जी ।

रामदयाल लो ! अबके वह पास वाला डाक्टर आन धमका, जिसकी लुगाई इसे अस्पताल ले गई थी ।

दादी यह क्यो आया ?

रामदयाल आया होगा इसकी सिफारिस करने ।

दादी तो उसे आने दे । मै भुगतूगी ।

दया (कांपकर) दादी जी ! आप इनसे कुछ न कहियेगा ।

रामदयाल (भड़ककर) चुप रहेगी कि (हाथ उठाकर) थापड़ दूं ! दादी जी तुम इन सुसरे को ठीक कर दो । आ जाओ, डाक्टर साहब !

दादी (कठोरता से, भृकुटी ताने) नमस्ते ! तुम किस लिए आये हो ?

डाक्टर इनकी पत्नी है न ·

दादी वह मेरी पोती है।

डाक्टर (खुश होकर) तब तो फिर मैं आप ही से बात करूगा। आपको मालूम है उन्हे दिक हो गई है ?

दादी फिर ?

डाक्टर इसके लिए बाकायदा डाक्टरी इलाज जरूरी है। उनका एक फेफड़ा खराब हो गया है। कम से कम छ महीने तक गोलियाँ, इंजेक्शन, और टॉनिक ·

दादी (जोर देकर) हमे इलाज नही कराना।

डाक्टर . जी !

दादी हमें इलाज नही कराना !

डाक्टर लेकिन बिना इलाज के देखिये इस पर पैसे खर्च नही होंगे। दवा अस्पताल मे मिलेगी। इंजेक्शन मेरा कम्पाउण्डर लगायेगा और टॉनिक मेरे पास फ्री आते हैं।

दादी हमे न टानिक चाहिये, न दवा, न इंजेक्शन !

डाक्टर जी !

दादी इन्हे अपने पास रखो। हम अपना इलाज अपने आप करेंगे।

डाक्टर टी० बी० का इलाज ?

दादी न, तू ही कर सकता है। धनवन्तरी का पुत्तर जो ठहरा।

डाक्टर . (चमककर) माताजी !

दादी (कड़ी पड़कर) हमारे मामले में दखल देने की जरूरत नहीं है। मरीज हमारा है।

डाक्टर लेकिन इस तरह आप मरीज को मार देंगी।

दादी तो तुझे क्या ?

डाक्टर : (चौंककर) आप आप यह क्या कह रही हैं ?

दादी जो तू सुन रहा है। तुझे कमीशन मिलता है ?

डाक्टर मुझे ? मुझे क्या मिलता है यह मैं ही जानता हूँ।

दादी फिर यहां क्यों आया ? किसने भेजा ?

डाक्टर (क्रोध से) मैं क्यों आया ? मुझे किसने भेजा ? (तभी दया कोठरी के दरवाजे में नजर आती है। डाक्टर बताने का इरादा छोड़ देता है और गहरा सांस लेकर) काश मैं बता सकता ! (दया से) दया देवी ! ये लोग दे-रहे हैं। हो सके तो जिन्दा रहने की कोशिश कीजिएगा। जिन्दा रहना कभी-कभी अपने लिए नहीं दूसरे के लिए जरूरी हो जाता है—नमस्ते (तेजी से चला जाता है)।

रामदयाल अजी, मै आऊंगा उनके भप्पे मे ? अब के कोई
माला आया तो धक्के देकर निकाल दूंगा।
वैसे ही जहर का घूट पिये बैठा हूं। साले मुझसे
कहवे हैं—लुगाई के पास न जाना। उसे

दादी (घबराकर) अच्छा-अच्छा, अब मुझे रिक्शा तक
छोड आ।

रामदयाल (अपनी री से निकलकर, उनका थैला उठाकर)
चलिये।

[दया आकर पैर छूती है।]

दादी जीती रह ! अगले सोमवार मे

दया (मच पर नीचे की तरफ जाते हुए) हां !
अगले सोमवार मे।

[रोशनी बुझ जाती है।]

दूसरा दृश्य

[वही दृश्य। आसन और हवनकुण्ड आदि लिए पडित जी बाहर से आते है।]

पडित रामदयाल जी!

रामदयाल (अन्दर से आकर, नमस्कार करके) आप सब चीजे लगाओ। मै कपडे बदलकर आया।

पडित अच्छा, यजमान। (पडित जी पूजा का सामान लगाते है। कुछ देर बाद रामदयाल दूसरा कुर्ता पहनकर आता है।) देवी नही आयी?

रामदयाल नहा रही है।

पडित अति उत्तम, अति उत्तम। दादीजी को कहला दिया था?

रामदयाल हाँ। वह और चाचीजी दोनो ही आएगी।

पडित बडी ज्ञानी-ध्यानी धर्मात्मा है। आज ग्यारहवे दिन, पाठ की अर्ध-पूर्ति पर उनका आना आवश्यक ही है।

रामदयाल पर उसकी हालत तो बिगडती जा रही है।

पडित नही-नही, रामदयाल जी! देवी [illegible]।

रामदयाल मुझे तो दीखता नही। हवन और पाठ से [illegible]

इतनी कमजोर हो गई है

पंडित : व्रत में थोडी शारीरिक दुर्बलता आ ही जाती है। पर वास्तविक शक्ति तो आत्म-बल ही की होती है।

रामदयाल (अपनी धुन में) मुझे तो खाँसी भी बढी लगे है।

पंडित (हवन का प्रबन्ध करते-करते) शरीर से विष-विकार का निकलना मंगलकारी होता है। देवी तैयार हो गई होगी शायद।

रामदयाल : देखता हूँ।

[रामदयाल सिर झुकाए अन्दर जाता है। पंडित पाठ शुरू करता है। कुछ देर बाद रामदयाल दया को पकड़कर लाता है। दया मुश्किल से चल पाती है।]

पंडित देवी को यहाँ बिठाओ। यहाँ, इस आसन पर। ठीक। तो पाठ शुरू करूँ ?

रामदयाल करो।

पंडित तो देवी। अपने मन को सब ओर से हटाकर, एकाग्र चित्त होकर, ध्यान करो उस देवी का जो हम सबकी मां है, जो शत्रु, रोग और कष्ट का संहार करती है हाँ, इसी प्रकार, प्रसन्न-चित्त, सूक्ष्म शरीर, ध्यान-मग्न। ओ३म् नम (पाठ शुरू करना चाहता है कि दिनेश तेजी से अन्दर आता है।)

दिनेश रामदयाल जी !

[दया उठकर अन्दर चली जाती है। रामदयाल का चेहरा तन जाता है।]

रामदयाल : आइये।

दिनेश : रामदयाल जी, मैं आपसे अर्ज करने आया हूँ कि आप यह सब बन्द करा दीजिये।

रामदयाल क्या ?

दिनेश यह पाठ ! इनके व्रत !

रामदयाल क्यों ?

दिनेश इनको दिक है। इनके लिए वह चीज खतरनाक है जो इनको थकाती है।

पण्डित आप देवी के व्रत के प्रति अनास्था प्रकट कर रहे हैं ?

दिनेश क्योंकि अगर इन्होंने इसी तरह व्रत रखे, और पूजा में बैठीं तो इनकी जान के लाले पड़ जाएँगे।

पण्डित लो, रामदयालजी।

दिनेश इनकी बातों में न आइये रामदयालजी। दया-जी को सिर्फ दवा, गिजा और आराम की जरूरत है।

पण्डित (हँसी उड़ाते हुए) और इनसे अच्छी हो जायेंगी —बिना व्रत रखे ? बिना पूजा किए ?

दिनेश हाँ। बिना व्रत रखे हुए। रामदयालजी, आप अस्पताल वालों का इलाज कराइए।

रामदयाल क्या ?

दिनेश वे दयाजी को सौ फीसदी ठीक कर देंगे।

पंडित जीना-जिलाना उनकी मुट्ठी में जो है।

दिनेश जहाँ तक टी० बी० का सवाल है, उनके इंजेक्शन, उनकी गोलियाँ, उनके आपरेशन मरीज को मौत के मुंह से निकाल लाते हैं।

पंडित मौत के मुंह से सिर्फ परमात्मा निकालता है।

दिनेश वह, जिसने टी० बी० के कीड़े और कैंसर के सेल बनाए? चेचक का जहर और दिल की नालियों में अटक जाने वाले क्लॉट बनाए? रामदयालजी, इन्सान को बचाने वाला, उससे प्रेम करने वाला सिर्फ इन्सान है—इन्सान जो जहर चूसता है, दवा बनाता है, आपरेशन करता है।

पंडित (रामदयाल से) यह नास्तिक है।

दिनेश हां, क्योंकि मैं भगवान के दोषों को इन्सान के सिर नहीं मढ़ता और इन्सान की खूबियों का ताज उठाकर भगवान के सिर पर नहीं रखता। रामदयालजी, अव्वल तो भगवान है नहीं, और अगर है तो हमारी तमाम मजबूरियों और बदनसीबियों का जिम्मेदार है। इसलिए उसके आसरे न रहिए।

रामदयाल (बिगड़कर) तुम्हारे डाक्टरों के रहम?

दिनेश हां। वही दयाजी को बचा सकते हैं।

रामदयाल (निराशाभरे स्वर) फिर मुझे नहीं बचाना।

दिनेश (चौंककर) क्या ?

रामदयाल मैं डाक्टरों का इलाज नहीं कराऊँगा, नहीं कराऊँगा !

दिनेश (संयम खोते हुए) चाहे वह मर जाए ?

रामदयाल हां तुम्हें क्या ?

दिनेश मुझे है।

रामदयाल क्या है ?

दिनेश मैं उसे पता होने नहीं दूंगा।

रामदयाल (आपे से बाहर होकर) तू ? तू कौन है ? कैसे आया ? वह तेरी क्या लगती है ?

दिनेश (भावनाओं के उछाल से आंदोलित) मेरी ! बताऊँ कि वह क्या लगती है ?

दया (तभी दया कोठरी के दरवाजे पर नजर आती है। उसने एक हाथ से दरवाजा पकड़ा हुआ है। उसका शरीर कांप रहा है।) दिनेश अगर तुम मेरी जान लेना नहीं चाहते तो निकल जाओ। निकल जाओ ! निकल जाओ !

[पंडितजी उठकर देखते हैं। खून देखकर काँपते हैं।]

पंडित	किसी को बुलाऊँ ? कोई वैद्य, डाक्टर ?
रामदयाल	वैद्य दूर है। डाक्टर पड़ोस में है।
पंडित	कहाँ पर ?
रामदयाल	(हाँफते हुए) यहाँ से चौथे मकान में। कहना, खून की उल्टी हो गई है।
पंडित	मैं अभी गया। आप उनको अन्दर ले जाइए।

[पंडित जी जाते हैं। रामदयाल दया को उठाकर अन्दर ले जाता है। तभी दादी और चाची आती हैं।]

दादी	(इधर-उधर देखकर) अरे, पूजा का सामान रखा है, ये लोग कहाँ गए ? रामदयाल !
रामदयाल	(अन्दर से आकर) दादी जी ! मैं तो कहीं का ना रहा। दया को खून की उल्टी हो गई।
चाची	(भयभीत) क्या ?
दादी	(कठोर) कहाँ है वह ?
चाची	(चिन्तित) आपने किसी को बुलाया ?
रामदयाल	हाँ, पंडित डाक्टर को बुलाने गया है।

[दादी रामदयाल की तरफ गुस्से से देखती है। वह नजर झुका लेता है। चाची दादी का हाथ पकड़कर अन्दर जाती है। रामदयाल खड़ा रह जाता है। तभी पंडित डाक्टर को लेकर आता है।]

रामदयाल	डाक्टर साहब !
डाक्टर	(गुस्से में) मरीज कहाँ है ?

[रामदयाल हाथ से अन्दर इशारा करता है। डाक्टर

अन्दर जाता है। रामदयाल पीछे-पीछे जाता है पर जाते-जाते पंडित से कहता है।]

रामदयाल पंडितजी ! आप यह सब उठाकर ले जाइये।

पंडित ले जाता हूँ, यजमान ! ले जाता हूँ।

[पंडित जल्दी-जल्दी अपना सामान बटोरता है और फिर दरवाजे के पास से अपने जूते पहनकर चला जाता है। ज्यों ही वह जाता है अन्दर के दरवाजे से डाक्टर निकलता है। पीछे-पीछे सब लोग आते हैं।]

चाची (विकल) हुआ क्या है, डाक्टर साहब ?

डाक्टर जो उन्होंने चाहा। उसका फेफड़ा बिल्कुल गल गया मालूम होता है।

चाची फेफड़ा गल गया ?

डाक्टर हाँ ! अस्पताल वाले कब से कह रहे थे। मैं बताता रहा कि यह मर जाएगी पर एक न सुनी।

चाची अब क्या होगा ?

डाक्टर होगा क्या ! आपरेशन होगा।

रामदयाल आपरेशन ?

[डाक्टर तेजी से उसकी तरफ देखता है।]

चाची डाक्टर साहब से कहो न, इसे दाखिल करा दे।

रामदयाल (गर्दन झुकाकर) डाक्टर साहब, इसे दाखिल करा दो।

डाक्टर इलाज नही कराया, आपरेशन कराने भेजते हो! लेकिन आपरेशन ऐसे नही होगा।

रामदयाल तो ?

डाक्टर इसके लिए खून देना होगा।

रामदयाल (डरकर) खून ?

डाक्टर हाँ, आपरेशन के लिए खून चाहिए।

रामदयाल लेकिन क्या अस्पताल से खून नही मिलता ?

डाक्टर अस्पताल मे खून बनता है ? बीबी को घुला-घुलाकर तुम मारो, खून दूसरे दे!

रामदयाल लेकिन मैं (पीछे की तरफ जाते हुए) मैं कैसे दे सकता हूँ! मैं तो खुद कमजोर हूँ। (दादी के पीछे जा खड़ा होता है।)

दादी (आगे आकर) हाँ, यह कैसे दे सकता है ?और आदमी का खून लेकर औरत की क्या सात जन्म मुक्ति होगी ?

डाक्टर मुक्ति का इतना खयाल है तो तुम दे दो।

दादी (चौंककर पीछे हटती है) मैं ?

डाक्टर हाँ, तुम तो इसकी दादी हो।

दादी मैं मैं क्यों होती इसे रिश्ते मानने लगे तो सारे जगत की दादी न बन जाऊँ!

डाक्टर : बहुत खूब ! जिस दिन पोता शादी करने चला था उस दिन यह उसकी बहन थी लेकिन आज तुम्हारी पोती ही नहीं !

दादी (आगे बढ़ते हुए) तूने क्या कहा ?

चाची (बीच में आकर) डाक्टर साहब, मेरा खून ले लो।

दादी (झपटकर दाएँ करते हुए) क्या ? तू अपना खून देगी ! अरे मेरे बेटे रमा-रमा के तूने ह[illegible] इसलिए बना रहे हैं कि तू खून बाँटती फिरे ? चल घर !

रामदयाल (उधर से निराश होकर) डाक्टर साहब ! [illegible] बिकता भी तो है ?

डाक्टर बिकता है।

रामदयाल कितने का आएगा ?

डाक्टर चार-पाँच सौ का।

रामदयाल (चौंककर) क्या ?

डाक्टर चार-पाँच सौ का। इतने [illegible]

रामदयाल (दादी जी की तरफ देखते हुए) दादी जी !

दादी (मुँह फेरकर) क्या है ?

रामदयाल अब क्या करूँ ?

दादी मैं क्या बताऊँ ? मेरे पास क्या थैली रखी है जो तेरी या उस मुए की हथेली पर रख दूँ ?

रामदयाल तो उधार दिलवा दो ।

दादी : किससे ?—बेटों से ? उन पे होता तो एक परदेस में नौकरी करता ? और मैं तुझसे पूछूँ हूँ तूने सासतर पढ़े हैं ?

रामदयाल सासतर ?

दादी हाँ, सासतर । अगर लुगाई पर पराए मरद का परछावाँ पड़ जाए तो वह क्या हो जाती है ?

रामदयाल पतिता ।

दादी और अगर बेटी के बदन में बाप के अलावा किसी और का खून मिल जाए ?

रामदयाल वेश्या पुत्री ।

दादी तो अक्ल के कोल्हू ! तू अपनी लुगाई के बदन में जाने किस-किस का खून डलवा के उसे क्या बनाने जा रहा है ? (देखता रह जाता है ।) अरे, उसकी जान तो सोख ली, अब उसका अगला जन्म तो खराब न कर ।

रामदयाल (हैरान) दादी जी !

दादी धर्म की कह रही हूँ ।

चाची लेकिन बिना इलाज के

दादी इलाज अस्पताल ही में होता है ? अगर इलाज कराना है तो मेरे पास आइयो। अपने वैद्य से दवा दिलवाऊंगी—अगर दो पुड़ियों में खून बन्द न हो जाए तो मेरा नाम बदल दीजो। (जाते हुए) आएगा ?

रामदयाल (गहरा सांस लेकर) आऊँगा, दादीजी। रास्ता नहीं है तो कहां जाऊँगा।

[दादी चाची का हाथ खींचकर ले जाती है। रामदयाल पूरी तरह थका बीच में पड़े मूढ़े पर बैठ जाता है।]

तीसरा अंक

[पहले अंक वाला दिनेश का कमरा। कमरा बिलकुल वैसा ही है। चाची अन्दर से कुछ किताबें लिए आती है और आकर किताबों को अलमारी में रखती है। तभी दिनेश आता है। चाची को किताबें रखते देखता है। फिर धीरे-धीरे आगे बढ़कर आवाज देता है।]

दिनेश चाची जी!

चाची (पलटकर, खुश होकर) तू आ गया!

दिनेश हां, चाची। जिन्दगी में यह कसम भी खाकर तोड़नी थी।

चाची तेरी कसम इतनी बड़ी है?

दिनेश चाची जी, मर जाना पर अपने लिए इस घर में कभी न आना।

चाची ऐसी बातें करेगा?

दिनेश सच कहता हूं, चाची। इस घर में कदम रखने को जी नहीं चाहता। यह घर नहीं, मेरी आरजुओं की मजार है।

चाची मैं जानती हूं। पर आज सवाल तेरा नहीं, उसका है।

दिनेश (चिन्तित होकर) उसका क्या हाल है?

चाची उल्टियाँ आ रही हैं।

दिनेश कोई फायदा नहीं ?

चाची अनाड़ी वैद्यों की पुड़ियों से खून रुका है? दिनेश, जब तक वह अस्पताल नहीं जाएगी, उसकी जान नहीं बचेगी।

दिनेश लेकिन मैं किसको कैसे समझाऊँ ? आप रामदयाल से बात नहीं कर सकतीं ?

चाची (उत्तेजित होकर) मैं ?

दिनेश हाँ।

चाची (तेजी से) दिनेश, मैं उसकी सूरत तक देखना नहीं चाहती।

दिनेश लेकिन दया की खातिर

चाची (उसकी तरफ देखकर फिर धीमी पड़कर) मिल लूंगी। पर वह मानेगा नहीं।

[दिनेश चाची की ओर देखता है।]

चाची उलटा मुझे आकर कह देगा।

दिनेश तब कतई न जाएगा।

दिनेश तो वह पिताजी की कैसे सुनेगी ?

चाची दिनेश, वे अड जाएँगे तो सब कुछ हो जाएगा। बस तू किसी तरह उन्हे मना ले।

दिनेश मैं पूरी कोशिश करूँगा, चाची जी। आपने उन्हे आने के लिए कह दिया था ?

चाची वे आते ही होगे। डाक्टर साहब से मिला ?

दिनेश हाँ, रात मिला था। पहले वे भी न मानते थे। पर जब मैंने बताया दादी जी बाहर गई हुई हैं, तब मान गए।

चाची : उनके आने मे बहुत फर्क पड जाएगा। वे डाक्टरो की बहुत मानते है।

[तभी दरवाजे मे दिनेश के पिता नजर आते है।]

चाची (दबे स्वर मे) वे आ गए।

[वह सिर पर पल्लू लेकर अन्दर चली जाती है। दिनेश दरवाजे की तरफ बढ़ता है। पिता अन्दर आते हैं। वे पहले से थके और उदास दीखते है। एक बार दिनेश को देखकर नजरें चुरा लेते है।]

पिता : ठीक हो ?

दिनेश जी हाँ। आप ठीक हैं ?

पिता हाँ, ठीक ही हूँ। (पलग पर बैठ जाता है। कुर्सी की तरफ इशारा करके) बैठ जाओ।

[दिनेश बैठ जाता है।]

पिता कौशल्या ने बताया—तुम मुझसे कुछ चाहते हो ?

दिनेश जी हाँ। (नजरें झुकाकर) मेरा हक नहीं रहा,

फिर भी आपके पास आया हूं।

पिता मुझे क्या करना है ?

दिनेश आपको मालूम है दया का फेफड़ा गल गया है। डाक्टरों ने आपरेशन बताया है।

पिता (उठकर) मगर तुम्हारी दादी अपना इलाज कर रही है।

दिनेश लेकिन उनकी पुड़ियों से तपेदिक नहीं रुकेगी। वे उसे मारकर रहेंगी।

पिता मुझसे क्या चाहते हो ?

दिनेश किसी तरह भी दया को अस्पताल भिजवा दीजिए।

पिता अम्मा के न चाहने पर भी ?

दिनेश आज चाहने न चाहने का सवाल नहीं, एक जान बचाने का सवाल है।

पिता (बहुत अर्थपूर्ण ढंग से) बच नहीं था ?

दिनेश (चौंककर) जी ?

पिता पहले मैं क्या कर पाया ?

वार दादी जी की जिद तोड दीजिए।

पिता तुम उनके यहाँ गये थे ?

दिनेश (बौखलाकर) जी।

पिता तुम दया के गए थे ?

दिनेश (गर्दन झुकाकर) जी हाँ।

पिता डाक्टर भी तुमने भेजा था ?

दिनेश जी हाँ, वे मेरे एक दोस्त की बहन के पति है।

पिता तभी तुम्हारी दादी ऐसे कर रही है।

दिनेश (चौंककर, फिर सभलकर) लेकिन उनको नफरत मुझसे हो सकती है, दया से तो नहीं ?

पिता (उठकर दायी ओर जाते हुए) मैं जानता हूँ। मगर काश वे मेरी सौतेली मा न होती या उन्होंने मेरे साथ सौतेली माँ जैसा बरताव किया होता।

दिनेश (उत्तेजना से) पर मेरे साथ तो कर लिया। पिताजी, मुझे अपनी माँ कभी याद न आयी। पर अब बार-बार मैंने महसूस किया है कि बच्चों से उनकी माँ नहीं छिननी चाहिए।

पिता (विह्वल होकर) दिनेश !

दिनेश पिताजी ! जब शाम होती है और मैं होता हूँ और कमरे मे कोई यह कहने वाला भी नहीं होता कि मैंने बत्ती क्यों नहीं जलाई, तब मुझे अपनी मा याद आती है।

पिता ऐसे न कह, मेरे बच्चे, ऐसे न कह। मैं बड़े दुख-

दायी धर्म मे बँधा हूँ। (संकल्प करके) पर मैं दया को भेजूंगा। दया अस्पताल जाएगी।

दिनेश — लेकिन जल्दी करना होगा। वक्त बहुत कम है।

पिता — तुम्हारी दादी जी कल आ रही है। मैं दया को परसों भिजवा दूंगा।

दिनेश — बहुत अच्छा।

पिता — और किसी चीज की जरूरत होगी ?

दिनेश — जी नहीं।

पिता — कुछ रुपया-पैसा ?

दिनेश — उसकी कोई जरूरत नहीं है।

पिता — [illegible] खून देने की बात थी ?

दिनेश — वह मिल गया है।

पिता — किस से ?

दिनेश — [illegible] के पास था।

पिता — [illegible] ?

दिनेश — (भावना से [illegible]) [illegible]
[illegible] था। [illegible]

पिता (बाहर जाने के लिए मुड़ते हुए) तो मैं मजी वगैरह ले आऊँ। तुम कौशल्या से कह देना।

दिनेश जी।

[पिता बाहर जाते हैं। कौशल्या तेजी से आती है।]

चाची : क्या कह गए ?

दिनेश वादा कर गए है।

चाची क्या ?

दिनेश कि भिजवा देगे।

चाची फिर सब ठीक हो जाएगा। अब डाक्टर से कह आना।

[तभी डाक्टर की आवाज़ आती है।]

डाक्टर दिनेश साहब !

दिनेश (दरवाजे की तरफ बढ़कर) डाक्टर साहब, आइए !

डाक्टर (अन्दर आकर कौशल्या को नमस्ते करते हुए) माफ कीजिए, मुझे जरा देर हो गई। एक मरीज के यहाँ जाना पड़ गया।

चाची कोई बात नही। आपकी मेहरबानी से काम हो गया।

डाक्टर (खुश होकर) इनके पिताजी मान गए ?

चाची जी हाँ। वे अभी-अभी कह गए है कि दया को अस्पताल भिजवा देगे।

डाक्टर और इनकी दादी जी ?

चाची वे उनकी मान जाएँगी।

डाक्टर कब लौट रही हैं ?

चाची कल।

डाक्टर (मुसकराते हुए) मैं तो नहीं आ रहा था। पर जब उन्होंने बताया कि वे यहां नहीं हैं

चाची बस संयोग ही समझिए कि उनको जाना पड़ गया। आप क्या पिएंगे ?

डाक्टर जरूरी है ?

चाची जी हां।

डाक्टर तो ठंडा ले आइए।

[चाची जाती है।]

डाक्टर खून का क्या होगा ?

दिनेश उसकी आप फिक्र न कीजिए। खून मैं दूंगा।

डाक्टर तुम ?

दिनेश हां, डाक्टर। जिन्दगी जिसकी है, उसके किसी काम आ जाए, इससे बढ़कर अच्छा क्या हो सकता है ?

डाक्टर   निशान मकबरे होते हैं। उनमें रहा नहीं जाता।

[तभी कौशल्या शरबत लेकर आती है और डाक्टर को देती है।]

डाक्टर   (गिलास लेकर) कौशल्या जी, इन्हें समझाइए—ये जिन्दगी को लाइलाज समझते हैं।

चाची   क्योंकि इसने खुद इलाज नहीं किया।

दिनेश   आप मुझे कसूरवार ठहराती हैं?

[डाक्टर दम बीच शरबत पीता है।]

चाची   हाँ। यह रोग अगर पाला तो तूने पाला।

दिनेश   (चौंककर) मैंने?

चाची   हाँ, तूने।

दिनेश   यानी मेरे लिए रास्ता था?

चाची   हाँ। जिसका हाथ पकड़ा था, पकड़े रहता, चाहे वह लाख छुड़ाती।

[दिनेश डाक्टर की तरफ देखता है।]

डाक्टर   (मुसकराकर गिलास मेज पर रखते हुए) मि० दिनेश, डाक्टर हूँ इसलिए कहूँगा—जो जिन्दगी की जायज़ खुशी के रास्ते में आता है, उसके आगे हथियार डालना जिन्दगी के साथ गद्दारी है।

दिनेश   डाक्टर!

डाक्टर   (अपना बैग उठाकर हाथ मिलाते हुए) जिन्दा रहो। जिन्दगी का तकाजा जिन्दादिली से पूरा करो।

[हाथ मिलाकर, कौशल्या का नमस्ते लेकर डाक्टर

आशीर्वाद ही निकलता है। अच्छा

पिता प्रणाम।

पंडित : सुखी रहो। (जाता है।)

पिता (उसके जाने पर पलटकर) कौशल्या!

चाची (अन्दर से आती है और तनिक मुँह एक ओर करके खड़ी हो जाती है) जी!

पिता : तुमने मेहरी से कह दिया है कि दया के यहाँ काम कर आया करे?

कौशल्या : जी हाँ।

पिता और रोटी बनाने वाली?

कौशल्या वह कल से जाएगी।

पिता : ठीक है। खयाल रखना। और तब तक खाना बनाकर भिजवाती रहना।

कौशल्या : जी।

पिता वैसे मैं रामदयाल से भी कहूँगा कि वह दया को यहीं भेज दे।

डाकिया (बाहर से आवाज आती है।) चिट्ठी!

[पिता बाहर जाता है। चिट्ठी ले पढ़ता आता है सहसा चौंक उठता है और गौर से पढ़ता है।]

पिता तूने उसकी हरकत देखी?

चाची जी, किसकी?

पिता दिनेश की। अब कानपुर जा रहा है।

चाची कानपुर?

पिता हाँ। काशीनाथ ने खबर दी है कि वह वहाँ

जाना ही ठीक है।

चाची क्योंकि जिस काम के लिए टिका हुआ था वह पूरा हो गया !

दिने नहीं।

चाची तो ?

दिनेश मैं मकबरे में रहना नहीं चाहता।

चाची यह मकबरा है ?

दिनेश यह सारा शहर मेरे लिए मकबरा है।

चाची और अब तक जो रहा है ?

दिनेश दया को देखा नहीं था, चाची। सब आ गया था।

चाची दिनेश !

दिनेश (एक बार उसे देखकर) उसके इतने करीब जाकर, उसके बिना रहा नहीं जायेगा।

चाची (लाजवाब हो जाती है। फिर आखिरी कोशिश करती है।) किसी तरह नहीं रह पाते ?

दिनेश चाची ! चाँद निकलता है तो समन्दर से नहीं रहा जाता। मैं कैसे रह पाऊँगा ?

[एक लम्हे की खामोशी छा जाती है।]

चाची और दया ?

दिनेश वह मुझ पर सगम मिटा चुकी है। (खामोशी के कुछ क्षण)

चाची उससे मिले बिना चला जाएगा ?

दिनेश हाँ।

चाची इतना पत्थर-दिल हो गया है ?

दिनेश   जब जाना ही है चाची तो मिलने का मोह कैसा !

चाची   (एक क्षण उसकी आँखों में देखकर) कब जाएगा ?

दिनेश   कल।

चाची   तो एक बात मानेगा ?

दिनेश   क्या ?

चाची   जब इतनी अक्लमन्दी की बात [illegible] तो एक और करना।

दिनेश   क्या ?

चाची   शादी कर लेना।

दिनेश   (हाथ उठाता है) चाची !

चाची   जब बात काटनी ही [illegible] जिद क्यों ?

दिनेश   अब मेरे लिए [illegible]।

चाची   यह तेरी जिद है।

दिनेश : मेरे दर्द की दवा नहीं है चाची, क्योंकि जो दवा थी वह खुद दर्द बन गई है।

[पलंग पर बैठकर चेहरे को हाथों में ढँक लेता है।]

चाची (एक क्षण उसकी तरफ देखती है। फिर उदासी के इस बोझिल वातावरण को दूर करने के लिए दिनेश को अकेला छोड़ने का निर्णय करती है।) अच्छा, मैं तेरे लिए चाय बनाकर लाती हूँ। जाना नहीं।

[चाची बिना नजरें मिलाए चली जाती है। दिनेश उसी तरह कुछ देर तक दर्द की तसवीर बना रहता है। सहसा दरवाजे पर दया नजर आती है। आहट-सी पाकर दिनेश चौंक उठता है और दरवाजे की तरफ देखता है। दया को देखते ही वह उठ खड़ा होता है।]

दिनेश (चौंककर) दया, दया! तुम कैसे चली आयीं? तुम्हारा तो अभी आपरेशन हुआ है!

दया (कमजोर, पर पूरी तरह संयमित स्वर में) मैं ठीक हूँ।

दिनेश (घबराकर) तुम यहाँ बैठो। (कुर्सी पर लाकर बिठाता है) तुम कैसे चली आयीं?

दया मैं तुम्हारे द्वार पर होकर आ रही हूँ।

दिनेश मेरे?

दया हाँ।

दिनेश मगर क्यों?

दया मुझे तुमसे कुछ पूछना है।

दिनेश क्या ?

दया वादा करो झूठ नहीं बोलोगे ?

दिनेश तुम क्या पूछना चाहती हो ?

दया जो सब जानते हैं सिर्फ मैं नहीं जानती।

दिनेश · क्या ?

दया मेरे आपरेशन के लिए खून किसने दिया ?

दिनेश दया!

दया (जोर-जोर से) बताओ मेरे आपरेशन के लिए खून किसने दिया ?

दिनेश (झूठ की तिलमिलाहट [illegible]) मैं [illegible] जानता।

दया जिसे सब जानते [illegible] तुम नहीं [illegible]

दिनेश (एक क्षण के लिए [illegible]) [illegible] जानता है ?

दया (व्यंग्य से) और किसी ने नहीं दिया ।

[दिनेश बौखलाकर और दया की तरफ देखकर रह जाता है।]

दया : और सब मर गए थे ?

दिनेश ऐसी बात नहीं है, दया !

दया : तो उन्होंने खून क्यों नहीं दिया ?

दिनेश (भावहीन स्वर) उनके पास बेकार नहीं था।

दया तुम्हारे पास था ?

दिनेश हाँ ।

दया . (स्वर घुट जाता है) क्या ?

दिनेश मेरे पास खून, माँस, आवाज, सब बेकार है। मरा नहीं गया वरना मर जाता ।

दया तो मुझे क्यों जिला लिया ? तुम्हारे लिए जिन्दगी का जवाब मौत था तो मुझे जवाब के बजाय सवाल क्यों दे दिया ?

दिनेश मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता था ।

दया तो फिर उस दिन मुझे अपने से जुदा क्यों होने दिया ? क्यों नहीं रोक लिया जब मैं अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारने चली थी ? बोलो, मुझे क्यों नहीं रोका ?

दिनेश मैं रोक लेता, सब कुछ रोक लेता, दया, अगर तुम [illegible] देतीं। तुमने एहसान और नमक की बात न उठाई होती!

दया लेकिन तुम यह नहीं मानते थे कि मेरी रगों

को फाड़कर उस ख़ून को वहीं का वहीं बहा देते, जिसमें उनका नमक और एहसान घुला था। मुझे उसी लमहे यूँ आजाद कर देते जैसे आज किया है।

दिनेश (चौंककर देखता है) आज ?

दया हाँ, जैसे आज। आज मैं आजाद हूँ। उनका जो कुछ मुझमें था, मैंने ख़ून के साथ थूक दिया है। आज अगर मुझमें किसी का कुछ है, तो तुम्हारा है।

दिनेश (चौंककर) दया !

दया हाँ दिनेश। आज पहली बार मैं अपनी हूँ। बे-झिझक उसकी हो सकती हूँ जिसकी थी।

दिनेश (बहुत ज्यादा चौंककर) दया !

दया दिनेश आज तुम मुझसे वह कह दो जो तुमने उस दिन कहा था। आज मैं सुन सकती हूँ। मैं सुनूँगी।

दिनेश दया !

दया मुझसे कहो मेरे दिनेश। अपनी चीज़ को, अपने लिए माँग लो।

दिनेश (एक नये, क्रांतिकारी निश्चय की गम्भीरता चेहरे पर आ जाती है।) इनकार तो नहीं होगा ?

दया (आँखें फाड़कर) नहीं।

दिनेश (कम्पित स्वर में) तो मेरी बन जाओ दया।

दया (उसकी बाहों में जाकर) मैं तुम्हारी हूँ। मैं

तुम्हारी हूँ।

दिनेश ओह, दया! (अपनी बाँहों में भींच लेता है)

[दो-तीन क्षण बाद दरवाजे में दिनेश के पिता नजर आते हैं। दोनों को इस स्थिति में देखकर नजर झुका लेते हैं और बहुत हौले से बोलते हैं।]

पिता दिनेश!

[दया और दिनेश अलग हो जाते हैं।]

पिता दया बेटी! (हाथ में थैला दिखाकर) जरा यह चीजें अन्दर अपनी चाची को दे आना (चीजें दया को दे देते हैं)।

दिनेश (पिता का उद्देश्य समझकर) दया! तुम अभी अन्दर नहीं जाओगी। पिताजी, मैं दया को अपने पास रखूँगा। वह मेरे साथ कानपुर जाएगी।

पिता यह मैं देख रहा हूँ!

दिनेश अब तुम चीजें अंदर ले जा सकती हो। मगर रखकर फौरन लौट आओगी। (दया अंदर चली जाती है)।

दिनेश आपको इस सिलसिले में कुछ कहना है?

पिता मैंने रिम में सब कुछ कहा है।

दिनेश लेकिन न कहकर भी आपने बहुत कुछ कहा है।

पिता तुम सुनोगे?

दिनेश हाँ।

पिता और रामदयाल अभी जिन्दा है।

दिनेश मै भी जिन्दा था। (पिता चौंककर देखते हैं।) जब दया की शादी रामदयाल से की गई थी तब मैं भी जिन्दा था।

पिता लेकिन दया तब तुम्हारी नही थी।

दिनेश वह मेरी थी।

पिता लेकिन दया ने अपना फैसला बदल दिया था।

दिनेश दया आज फिर फैसला बदल रही है।

पिता क्या ?

दिनेश मैं दया को बुलाऊँ ?

पिता अब कोई फायदा नही। ये बीती बाते है।

दिनेश बाते सिर्फ मौत के बाद बीतती है। जब तक आदमी जीता है, कुछ नही बीतता।

पिता मैं बहस नही करूँगा। लेकिन इतना जरूर कहूँगा, अपना हक छोडकर, दूसरे को सौंपकर, फिर उससे वापिस लेना, ठीक नही है। खूब-सूरत नही है।

दिनेश मौत खूबसूरत है ?

पिता क्या ?

दिनेश आपने दया को देखा था। वह खून थूकने लगी थी। मौत की बांहो मे चली गई थी। क्या यह ठीक था ? खूबसूरत था ?

पिता हारी-बीमारी सबको लगी रहती है।

दिनेश दया को महज तन का रोग था ?

पिता नहीं था तो यह उसका पागलपन था।

दिनेश पिताजी, जिसे आपने पागलपन कहकर उड़ा दिया वह होश का न रुकने वाला, न मिटने वाला तकाजा था। हम एक-दूसरे के बिना जिए जरूर हैं, पर हमारा जीना मौत की वह हिचकी रही है जो जिन्दगी के गले में अटककर रह जाती है। हमने दिन काटे हैं, पर उससे ज्यादा दिनों ने हमें काटा है।

पिता पर दया ने सदा मान-मर्यादा का खयाल रखा है।

दिनेश उसने उस गलती की कीमत भी चुकाई है।

पिता यह तुम्हारा खयाल है।

दिनेश आप उसका खयाल जानना चाहते हैं ? (तभी दया आती है। दया की ओर देखकर) दया, पिताजी तुम्हारा खयाल जानना चाहते हैं।

दया मेरी जिन्दगी में अब कोई खयाल नहीं है।

पिता दया !

दया पिताजी, जो आदमी मौत के मुँह से बचकर आता है, उसके लिए बस एक चीज रह जाती है—जिन्दगी !

पिता लेकिन बेटी, तुम्हारी शादी !

दया मेरी शादी हुई थी !

पिता नहीं-नहीं, दया

दया पिताजी, जिसके साथ मेरे फेरे फिरे थे, उसने मुझे कभी नहीं चाहा। मैंने भी उसे कभी नहीं

चाहा। हम एक-दूसरे को बस तकलीफ और घुटन और एक सड़ती हुई लाश-सा रिश्ता दे सके है। पर शुक्र है, मौत के आगे उन्होने रिश्ते की उस गॉठ को खोल दिया, जिसने उस लाश को बॉध रखा था।

पिता तुम इस बात पर खफा हो कि उसने तुम्हे खून नही दिया ?

दया मैं बस इसी बात के लिए उनकी एहसानमन्द हूँ कि उन्होने मेरे जिस्म मे खून की वह बूंद न डाली जो मुझे एक बार फिर एहसान और बुजदिली के समुद्र मे ले डूबती !

पिता लेकिन फिर भी वह तुम्हारा पति है।

दया . गलत आदमी के लिए बोले जाने पर नाम भी भ्रष्ट हो जाते है, पिता जी !

पिता दया !

दया अब झूठ का, अनिच्छा का, अपने और दूसरे के अनादर का खेल और नही खेलूंगी, पिताजी ! जो मेरा है, उसके पास रहूँगी।

पिता दया !

दया यह मेरा आखिरी फैसला है।

पिता और रामदयाल ?

दया उनकी दूसरी जगह शादी करा दीजिएगा। (पिता हैरान होकर देखता है) उन्हे फर्क नही पडेगा।

दिनेश हम जा सकते है ?

पिता (कुछ देर दिनेश की आँखों में देखकर) हाँ।

[दिनेश दया की तरफ देखता है। वह चलने के लिए कदम उठाता है। दया पिता के पास आती है और झुककर उनके पाँव छूती है।]

पिता · (सिर पर हाथ रख) आज तुम्हारा हक अदा नहीं करूँगा। लेकिन जिस दिन रामदयाल की शादी करा दूँगा, तुम्हें अपना आशीर्वाद भेजूँगा।

[दिनेश झुककर पिता के पाँव छूता है। पिता उसके सिर पर हाथ रखकर नजरों में अन्दर की तरफ जाने के लिए मुड़ता है।]

दिनेश जरा चाची जी को भेज दीजियेगा।

[पिता एक नजर देखता है, फिर अन्दर चला जाता है। दिनेश और दया एक दूसरे को देखते हैं।]

दया तुम्हें अफसोस तो नहीं होगा ?

दिनेश (बहुत गम्भीरता से) होगा !

दया (चौंककर उसकी तरफ देखती है) तुम्हें अफसोस होगा ?

दिनेश हाँ ! इस बात का कि तुम्हें उस दिन क्यों जाने दिया था !

दया दिनेश !

हिन्दी मे नाटक भी है।

नाटककार भी।

किसी का शिल्प सबल है।

किसी का कथानक।

किसी का उद्देश्य।

हर नाटक अपना अलग 'रस' रखता है और यही रस उसका विशिष्ट रूप प्रदान करता है। श्री रेवतीसरन शर्मा सर्वोत्तम रेडियो-नाटककार, सफल मच-नाटककार, उपन्यास-कार तथा कहानीकार है और उनकी सब कृतियो मे उनका विशिष्ट रग और रस मिलता है। उनका गद्य पद्य की तरह सुन्दर, लय-बद्ध और अलकृत होता है। उनकी कल्पना के शिखरो पर कविता के बादल मडराते रहते हैं। लेकिन उनके यहा अघेरा नहीं रहता। हमेशा रोशनी रहती है—जीवन की, बौद्धि-कता की, स्वस्थ, सबल और सुसस्कृत भाव-नाओ की।

इसीलिए उनकी कृतिया मन को छूती हैं, मस्तिष्क को आलोकित करती हैं।

इसी कारण उनका साहित्य—कविता और दर्शन—दोनो के गुण रखता है।